अनुभवियों के अनुभव

KhushRaazi 2024-25

SENIOR CITIZENS CARE

and research centre

खुशराज़ी

Happiness in Journey...

खुशराज़ी भवन का भव्य उदघाटन

अनुक्रमणिका

बीके राजयोगिनी मुन्नी दीदीजी - आशीर्वचन
बीके सीए ललित ईनानी - प्रस्तावना
बीके ईशिता दीदी - स्नेहमयी भावनाएं

दिव्य अनुभव

वानप्रस्थी

05 वैकुंठ लक्ष्मी
07 इंदु बनोट
09 ज्योति पोपट
11 वेंकटचलम भाई
12 विजया लक्ष्मी बहन और विश्वनाथ भाई
13 तृप्ता अरोड़ा
15 माधुरी गुप्ता और सत्य नारायण गुप्ता
19 लतिका गांगुली और डॉ. शिवराम गंगोपाध्याय
अनुसूया सोलंकी 21
प्रतिमा लाल 23
किरण मुसावड 25
अर्चना बंसल 27
प्रमिला देवी 29
प्रतिभा साव 33
शोभा अग्रवाल 35
श्रद्धा शेठ 37

सेवाधारी

40 हरिवल्लभ शर्मा
41 बी.के. हिना बहन
43 बी.के. स्नेहा बहन
47 बी.के. आनंद भाई
49 बी.के. कबिराज भाई
50 डॉक्टर मोनिका बहन
बी.के. मनोज भाई 51
बी.के. संभव जैन 52
बी.के. हरीश चंद्र 53
बी.के. महेंद्र कुमार 55
बी.के.मीना माता 56

वानप्रस्थियों के सम्बन्धी

बी.के. पद्मा बहन 59
बी.के. राधा बहन 61
डॉ. अंकित पटेल 64
बी.के. सोनिया बहन 66

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का मुख्य उद्देश्य है – मानव आत्मा को अपने परम स्वरूप की पहचान देना और जीवन के प्रत्येक पड़ाव को दिव्यता, शांति और आत्म-सम्मान से भरपूर बनाना। इसी उद्देश्य की साकार प्रतिमा है – खुशराजी सीनियर सिटिजन होम, अहमदाबाद।

यह भवन एक साधारण रिटायरमेंट होम नहीं, बल्कि एक ऐसा ईश्वरीय तपोवन है, जहाँ जीवन के वानप्रस्थ आश्रम को भी आध्यात्मिक उत्सव के रूप में जिया जा रहा है। यहाँ रह रहे वानप्रस्थी आत्माओं को जो सम्मान, प्रेम, सेवा और आध्यात्मिक वातावरण मिल रहा है – वह वास्तव में अद्‌भुत और अनुकरणीय है।

मैं विशेष सराहना करती हूँ बीके ईशिता बहन और उनकी समर्पित टीम की, जो दिन-रात सेवाभाव, धैर्य और स्नेह से इस कार्य को सम्भाल रही हैं। साथ ही बीके ललित भाई की निस्वार्थ सहायता और मार्गदर्शन इस सेवा के पीछे एक मजबूत आधार के रूप में कार्य कर रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि इस अनुभव पुस्तिका के माध्यम से खुशराजी भवन में हो रही ईश्वरीय सेवाओं, अनुभवों और भावनाओं को शब्दों में संजोया गया है। यह न केवल एक रिपोर्ट है, बल्कि एक प्रेरणास्रोत है उन सभी के लिए, जो वृद्धावस्था को भी एक नई शुरुआत के रूप में देखना चाहते हैं।

मेरी शुभकामनाएं हैं कि यह सेवास्थान निरंतर बाबा की पालना में फलता-फूलता रहे और अनेक आत्माओं को आत्मिक सुख-शांति का अनुभव कराता रहे। शिव बाबा की विशेष मदद, शक्तियाँ और आशीर्वाद सभी पर सदा बना रहे।

बीके मुन्नी दीदी

मैनेजिंग डायरेक्टर – खुशराजी सीनियर सिटिजन होम, अहमदाबाद

आशीर्वचन

प्रस्तावना

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के सेवा-संकल्पों की एक विशेष कड़ी के रूप में खुशराजी सीनियर सिटिजन होम, अहमदाबाद की स्थापना वर्ष 2022 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय, माउंट आबू के प्रेरणा से हुई। इसका उद्देश्य था – उन वानप्रस्थियों को दिव्य स्नेह, आत्म-सम्मान और श्रेष्ठ जीवन के वातावरण में सहारा देना, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन दूसरों की सेवा, पालन-पोषण व समाज के लिए समर्पित किया।

यह सेवा-धाम न केवल एक निवास है, बल्कि एक दिव्य ऊर्जा से भरा आध्यात्मिक परिवार है, जहाँ हर वानप्रस्थी को यह अनुभूति होती है कि अब उनका जीवन और भी अर्थपूर्ण और सार्थक हो रहा है। यहाँ के सेवाधारी निःस्वार्थ भाव से, आत्मीयता और सम्मानपूर्वक सेवा करते हैं, जिससे हर बुज़ुर्ग को अपनेपन, सुरक्षा और सम्मान की भावना मिलती है।

इस अनुभव-पत्रिका में सम्मिलित अनुभव न केवल इस केंद्र की गतिविधियों का दस्तावेज़ हैं, बल्कि यह गवाही देते हैं उस पवित्र उद्देश्य की, जिसके लिए यह केंद्र संचालित किया जा रहा है। वानप्रस्थियों की आत्मा की गहराई से निकले अनुभव, समर्पित सेवाधारियों की भावना और उन पुत्रियों की श्रद्धा – जो स्वयं इस संस्था में समर्पित हैं – सब मिलकर इस घर को एक दिव्य तीर्थ बना देते हैं।

मुझे यह कहते हुए गर्व होता है कि खुशराजी सीनियर सिटिजन होम, अहमदाबाद अब केवल एक भवन नहीं, बल्कि स्नेह, सम्मान और आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत एक अनुपम आध्यात्मिक सेवास्थान बन चुका है।

मैं इस पत्रिका के माध्यम से उन सभी सेवाधारियों, दानदाताओं, व्यवस्थापकों और सहयोगियों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी सेवा, सहयोग और शुभभावनाओं से यह कार्य सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है। साथ ही, मैं सबको आमंत्रित करता हूँ कि वे इस सेवा से जुड़कर अपने जीवन को भी श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा लें।

ईश्वरीय सेवाधारी,
बीके सीए ललित ईनानी
ट्रस्टी–खुशराजी सीनियर सिटिजन होम, अहमदाबाद
सबका भला हो सब सुख पाएं

स्नेहमयी भावनाएं

खुशराजी सीनियर सिटिजन होम का संचालन मेरे लिए केवल एक ज़िम्मेदारी नहीं, बल्कि एक सौभाग्य है – वह सौभाग्य जिसमें मैं प्रतिदिन उन आत्माओं की सेवा कर रही हूँ, जिन्होंने अपने जीवन के अनमोल वर्षों को दूसरों के लिए समर्पित किया।

प्रत्येक दिन यहाँ सेवा करते हुए अनेक प्रकार की व्यवस्थात्मक, भावनात्मक और व्यक्तिगत चुनौतियाँ आती हैं – कभी स्वास्थ्य से जुड़ी स्थितियाँ, कभी वानप्रस्थियों के मनोभावों को संभालने की ज़रूरत, तो कभी केंद्र के संचालन से संबंधित सूक्ष्म विषय। लेकिन इन सबके बीच जो बात मुझे निरंतर स्थिर और प्रसन्न रखती है, वह है – शिव बाबा की अप्रत्यक्ष मदद और संस्था के वरिष्ठों का स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन।

विशेषकर आदरणीय बीके मुन्नी दीदी और बीके CA ललित भाई जी की ओर से समय-समय पर मिलने वाली प्रोत्साहन, समाधानकारी दृष्टि और स्नेहभरी शक्ति इस सेवा को सहज बना देती है। दीदीजी की ममतामयी दृष्टि और भाईजी की योगयुक्त प्रशासनिक क्षमता मेरे लिए एक प्रेरणा बन चुकी है।

इन दो वर्षों में मैंने महसूस किया है कि सेवा करते हुए स्वयं की आत्मिक उन्नति भी कितनी गहराई से होती है। हर चुनौती एक अवसर बन जाती है – स्वयं को परखने का, सहनशक्ति बढ़ाने का, और सबसे बढ़कर, बाबा के श्रीमत पर अचल रहने का। जब वानप्रस्थियों के चेहरे पर संतोष की मुस्कान देखती हूँ, तो लगता है कि यह सेवा नहीं, बाबा की सौगात है।

इस अनुभव पत्रिका में प्रस्तुत अनुभव उसी सौगात के जीवंत प्रतिबिंब हैं – जहाँ हर पंक्ति में किसी का आशीर्वाद छिपा है, और हर शब्द में ईश्वर की करुणा झलकती है।

मैं दिल से आभार प्रकट करती हूँ शिव बाबा, हमारे वरिष्ठ भाई - बहनों का और हर सेवाधारी आत्मा का, जिन्होंने मिलकर इस सेवा को सफल, सुंदर और सुखद बनाया। यही कामना है कि यह दिव्य धारा यूँ ही बहती रहे और अनेक आत्माओं को शक्ति, सुकून और सच्ची खुशी देती रहे।
सब पर बाबा की छत्रछाया बनी रहे।

आपकी अपनी,
बीके ईशिता
निदेशक, खुशराजी सीनियर सिटिजन होम, अहमदाबाद

वैकुंठ लक्ष्मी

भोपाल, उम्र 92

मैं पिछले ढाई वर्षों से खुशराजी भवन में रह रही हूँ। मैं अक्टूबर महीने की 28 तारीख को यहां आ गई। मेरी उम्र अधिक होने के कारण यहां आने का निर्णय लेना आसान नहीं था, लेकिन भोपाल सेंटर की बहन, डॉ. रीना बहन ने विशेष प्रयास करके मुझे यहां स्थान दिलाया।

हालाँकि मेरी उम्र अधिक है, फिर भी मैं अपनी दिनचर्या स्वयं संभाल लेती हूँ। आवश्यकता पड़ने पर यहाँ रहने वाले भाई-बहनों का सहयोग लेती हूँ। इस भवन को ईशिता बहन, दीप्ती बहन और कृति बहन अत्यंत स्नेह और सेवाभाव से संभालती हैं। यहाँ अमृतवेले से लेकर रात तक बाबा की दिनचर्या के अनुसार सब कुछ नियमित रूप से चलता है।

खुशराजी भवन की भोजन व्यवस्था:
सुबह 8:30 बजे नाश्ता परोसा जाता है, जिसमें ढेर सारी वैरायटी होती है—जैसे दलिया, स्प्राउट्स, दही, आलू पोहा, उपमा, साबूदाना खिचड़ी, ढोकला आदि। खास बात यह है कि नाश्ते का मेनू कम से कम दस दिन तक दोहराया नहीं जाता, जिससे हर दिन कुछ नया स्वाद मिलता है। हर रविवार यहाँ विशेष स्वादिष्ट ब्रह्मभोजन होता है। शाम 4:30 बजे चाय और snacks परोसे जाते हैं, जिनमें भी वैरायटी का ध्यान रखा जाता है। रात 7:30 बजे भोजन के पश्चात हर रोज गिर गाय का दूध परोसा जाता है।

खुशराजी भवन में रहने का अनुभव
भारत में 60 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों को अकेलापन बहुत महसूस होता है। इस उम्र में अकेले रहना कठिन हो जाता है, जिससे मन घबराने लगता है। लेकिन खुशराजी भवन में हम सभी भाई-बहन एक परिवार की तरह साथ रहते हैं, जिससे अकेलेपन का अनुभव नहीं होता।

यहाँ पिकनिक, सामूहिक जन्मदिन और त्योहारों को पूरे उल्लास और सजावट के साथ मनाया जाता है। हम स्वयं को पद्मा-पद्म भाग्यशाली समझते हैं, क्योंकि देश-विदेश से जो महारथी भाई-बहन खुशराजी में आकर हमें ज्ञान, योग और अपने अमूल्य अनुभवों से समृद्ध करते हैं। उनके द्वारा साझा की गई अनुभूतियाँ और गहन ज्ञान हमें अपने आत्मिक पुरुषार्थ को सशक्त बनाने की प्रेरणा देते हैं। यह हमारे पुरुषार्थ के लिए मानो एक लिफ्ट के समान होता है, जो हमें तेज गति से आत्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करता है।

खुशराजी में मनाए जाने वाले सभी त्योहारों और जन्मदिन समारोहों में मधुबनवासी ललित भाई साहब का विशेष सहयोग रहता है। वे न केवल भवन की व्यवस्था और संचालन को सुचारू रूप से संभालते हैं, बल्कि अपनी मधुर उपस्थिति से हमारे आत्मिक वातावरण को और भी ऊर्जावान बना देते हैं।

उनका नेतृत्व और सहयोग हम सभी के लिए संबल का कार्य करता है। ललित भाई साहब के प्रेमपूर्ण व्यवहार और मार्गदर्शन से हम सभी का मनोबल ऊँचा रहता है। उनकी प्रेरणा से हम सभी अपने पुराने संस्कारों और दुखों को भूलकर, नए उमंग-उत्साह के साथ बाबा की याद में लीन हो पाते हैं।

खुशराजी की व्यवस्था और सेवा का संचालन बहुत ही सुंदर और सुव्यवस्थित ढंग से होता है। यहाँ 15-20 सेवाधारी भाई-बहन निष्ठा और समर्पण के साथ सेवा कार्य करते हैं। भोजन निर्माण (भंडारे) से लेकर भवन की स्वच्छता, व्यवस्था और हर छोटी-बड़ी आवश्यकता के प्रति वे पूरी तत्परता से कार्य करते हैं। उनकी सेवाभावना और मधुर व्यवहार से हम सभी को एक विशेष आत्मीयता और अपनापन का अनुभव होता है। वे सेवा करते समय जिस समर्पण और प्रेम की भावना रखते हैं, वह हमें बाबा के दिव्य परिवार का हिस्सा होने का अहसास कराता है।

इस दिव्य वातावरण में हर ओर शांति, सुख और स्नेह का प्रवाह अनुभव होता है। यहाँ के वाइब्रेशन अत्यंत शक्तिशाली और सकारात्मक है, जो हमारे आत्मा और शरीर को ऊर्जा से भर देते हैं। हम सभी वानप्रस्थी भाई-बहन यहाँ पर एक अलौकिक आनंद और संतोष का अनुभव करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो बाबा ने स्वयं हमारे लिए इस वानप्रस्थ जीवन को स्वर्णिम मार्ग में परिवर्तित कर दिया है।

हम बाबा की इस अनुपम पालना के प्रति हृदय से कृतज्ञ हैं। बाबा ने हमें इस जीवन में जो अद्भुत अनुभव, ज्ञान और सेवा का अवसर प्रदान किया है, उसके लिए हम अपनी आत्मा की गहराइयों से धन्यवाद व्यक्त करते हैं। हम इस दिव्य अनुभूति के लिए बाबा और मधुबन के समस्त भाई-बहनों के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं। यह सब बाबा की अद्भुत योजना और शुभ संकल्पों का ही परिणाम है।

वाह बाबा, वाह ड्रामा!
ओम शांति

इंदु बनोट

दिल्ली, उम्र 83

सभी खुशराजी परिवार के प्यारे भाई-बहनों और आदरणीय दीदियों को हृदय से ॐ शांति।

बाबा की असीम कृपा से मुझे खुशराजी का अनुभव प्राप्त हुआ है और मैं पूरे विश्वास और अनुभव के साथ कह सकती हूं कि खुशराजी अपने नाम के अनुरूप ही है। वास्तव में यही इसके लिए सर्वश्रेष्ठ और उपयुक्त नाम है। कहा भी जाता है — "खुशी जैसी खुराक नहीं, खुशी जैसा खजाना नहीं।"

खुशराजी में प्रवेश करते ही ऐसा लगता है मानो आत्मा ने अपने सच्चे घर को पा लिया हो। यहां हर तरफ खुशी के अद्भुत और दिव्य वाइब्रेशन्स महसूस होते हैं। यहां के वानप्रस्थियों के चेहरे की चमक और आंखों की संतुष्टि से सहज ही उनकी आत्मा की प्रसन्नता का अनुभव किया जा सकता है। देखने वाले को भी इस दिव्यता और खुशी का सहज ही एहसास हो जाता है।

खुशराजी — बिना कारण खुशी का अनुभव

यह भी एक अटल सत्य है कि बिना कारण खुशी का अनुभव नहीं हो सकता। जहां प्राप्तियां होती हैं, वहां मन और बुद्धि स्वाभाविक रूप से आकर्षित हो जाते हैं। आत्मा को ऐसे स्थान के प्रति सहज प्रेम और उत्सुकता जागृत हो जाती है। यही भावना हमें खुशराजी के प्रति भी होती है।

ज्ञान, मनोरंजन और आत्मिक संतुष्टि का अनोखा संगम

खुशराजी में मन और बुद्धि को व्यर्थ से मुक्त रखने के लिए अनेक गतिविधियाँ (Activities) आयोजित की जाती हैं। इन गतिविधियों से न केवल ज्ञान की वृद्धि होती है, बल्कि आत्मा को आनंद और तृप्ति का अनुभव भी होता है।

वानप्रस्थी एक-दूसरे को गहराई से समझ पाते हैं, जिससे आपसी प्रेम और सहयोग की भावना प्रबल होती है।

सुबह मुरली के बाद चिंतन के लिए विशेष टॉपिक दिया जाता है, जिससे मन और बुद्धि में चलने वाले विचार सागर का सही दिशा में मंथन होता है। इससे आत्मा व्यर्थ विचारों और परचिंतन से मुक्त रहती है।

यहां समय के महत्व को गहराई से समझा गया है। यहाँ का हर कार्य समय पर और मर्यादाओं के अनुसार होता है।

स्वास्थ्य और सुविधा की संपूर्ण व्यवस्था

खुशराजी में दिनचर्या इतनी व्यवस्थित है कि मन और शरीर दोनों का संतुलन बना रहता है। भोजन न केवल स्वादिष्ट होता है, बल्कि पूरी तरह से पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक भी होता है।

वानप्रस्थियों के स्वास्थ्य की जाँच हर रविवार को की जाती है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समय पर समाधान किया जा सके।

यहाँ एक छोटा-सा हॉस्पिटल भी है, जहाँ हर प्रकार की तुरंत चिकित्सा सहायता उपलब्ध है। यदि आवश्यकता होती है, तो प्राइवेट हॉस्पिटल तक पहुँचाने के लिए एम्बुलेंस की सुविधा भी दी जाती है। फिजियोथेरेपी डिपार्टमेंट में आधुनिक मशीनों की सुविधा है, और डॉ. मोनिका बहन जैसी अनुभवी चिकित्सक प्रेमपूर्वक सेवा करती है। सेवाधारी भाई-बहनें पूरे मन और समर्पण भाव से सेवा प्रदान करते हैं। यदि किसी भी प्रकार की आवश्यकता हो तो तुरंत सहायता के लिए सेवाधारी उपस्थित रहते हैं।

ईशिता दीदी और ललित भाईजी — ममता और दृढ़ता का संगम

खुशराजी की यह दिव्यता केवल बाबा के आशीर्वाद से ही संभव हो पाई है, लेकिन इसके पीछे निमित्त ईशिता दीदी और ललित भाई की सेवाएं विशेष भूमिका निभाती हैं। ईशिता दीदी का संकल्प और दृढ़ता इतनी प्रबल है कि बड़े से बड़ा कार्य भी उनके मार्गदर्शन में सहज और मनोरंजक बन जाता है। वह अपनी टीम को निरंतर प्रोत्साहित करती रहती हैं, जिससे पूरी व्यवस्था प्रेम और अनुशासन के साथ चलती है। ललित भाई का स्वभाव भी अत्यंत मधुर और विनम्र है। उनके शांत और संयमित व्यवहार से वानप्रस्थियों को आत्मिक स्थिरता और सहजता का अनुभव होता है।

आत्मिक आनंद और मनोरंजन का दिव्य संगम

खुशराजी में आत्मिक उन्नति के साथ-साथ मनोरंजन का भी विशेष ध्यान रखा जाता है।

➡ समय-समय पर वानप्रस्थियों को घूमने और पिकनिक के लिए ले जाया जाता है।

➡ हर महीने जन्मदिन बड़े ही आत्मिक और पारिवारिक माहौल में मनाया जाता है। केक काटने के साथ-साथ गानों और मनोरंजन कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

➡ हर त्यौहार का आयोजन भी भव्यता से किया जाता है, जिससे आपसी प्रेम और सहयोग की भावना प्रबल होती है।

खुशराजी — स्वर्गीय अनुभूति का सजीव स्वरूप

खुशराजी में आत्मा को वही अनुभूति होती है, जिसकी कल्पना सतयुग के लिए की जाती है। बाबा ने अपने बच्चों के लिए जो वचन दिया था कि "मैं तुम्हारा अंत तक ख्याल रखूंगा," वह यहाँ आकर पूर्ण रूप से सिद्ध होता है।

मैं पूरे हृदय से ईशिता दीदी, ललित भाई और खुशराजी परिवार के सभी सेवाधारी भाई-बहनों का धन्यवाद करती हूँ।

बाबा ने हमें खुशराजी के रूप में एक स्वर्गीय उपहार दिया है। यहाँ का दिव्य अनुभव शब्दों से परे है।

"वाह बाबा, वाह! वाह मेरा भाग्य, वाह!" ...."शुक्रिया बाबा... शुक्रिया खुशराजी... ओम शांति।"

ज्योति पोपट

अहमदाबाद, उम्र 76

शांतिवन की सेवाएं — एक अविस्मरणीय यात्रा

लगभग 20 वर्षों तक मैंने शांतिवन बीके कॉलोनी में सेवा का सौभाग्य पाया। वहाँ पर मुझे ज्यूरीस्ट विंग, स्पार्क विंग और मीडिया में सेवा करने का विशेष अवसर मिला। शाम के समय मैं आबू रोड के आस-पास के गांवों में जाकर प्रदर्शनी, राजयोग कोर्स और मुरली क्लास का आयोजन करती थी। इन सेवाओं के माध्यम से अनगिनत आत्माओं को बाबा के दिव्य ज्ञान का अनुभव कराने का सौभाग्य मिला।

बाद में बाबा ने मुझे शिवमणि होम में तीन वर्षों तक सेवा करने का अवसर दिया, जहाँ मैंने Godlywood Studio में सेवा दी। वहाँ पर विभिन्न आध्यात्मिक प्रोजेक्ट्स में योगदान देने का सौभाग्य मिला, जिससे आत्मा को गहरी तृप्ति का अनुभव हुआ।

इसके पश्चात मैंने वैल्यू एजुकेशन डिपार्टमेंट में भी सेवा की, जहाँ मुझे विभिन्न कार्यक्रमों और प्रोजेक्ट्स के माध्यम से अनेक आत्माओं तक बाबा के मूल्यों का संदेश पहुँचाने का अवसर मिला। बाबा की पालना में बिताया गया यह समय मेरे लिए एक स्वर्णिम युग के समान है।

बाबा की पालना से खुशराजी में आगमन

सेवा के साथ-साथ मुझे स्वास्थ्य संबंधी कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा। मुझे बार-बार इलाज के लिए अहमदाबाद जाना पड़ता था। ऐसे में बाबा ने मुझे एक अद्भुत आशीर्वाद दिया — बाबा ने मुझे अपनी गोद में बुला लिया और मुझे खुशराजी का वरदान प्राप्त हुआ।

खुशराजी में आकर मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे आत्मा ने अपना सच्चा घर पा लिया हो। इस दिव्य स्थान का अनुभव ऐसा है जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। जैसे सूरज के सामने अल्पकालीन प्रकाश फीका पड़ जाता है, वैसे ही खुशराजी की दिव्यता के सामने लौकिक सुख-सुविधाएं तुच्छ प्रतीत होती हैं।

यहाँ का वातावरण इतना दिव्य, शांत और शक्तिशाली है कि जो भी यहाँ एक बार आ जाता है, उसका वापस जाने का मन ही नहीं करता। यहाँ के निवासी अपने लौकिक परिवार से पूरी तरह मुक्त होकर एक नए रूहानी परिवार का हिस्सा बन जाते हैं।

ईशिता दीदी की मातृवत पालना

खुशराजी की निमित्त ईशिता दीदी के बारे में मैं क्या कहूं! उनका वात्सल्य भरा स्वभाव और निस्वार्थ सेवा हमें लौकिक माया से भी मुक्त कर देता है। हर समस्या में उनसे इतना सुंदर सहयोग मिलता है कि मन तुरंत हल्का हो जाता है। उनकी पालना और मार्गदर्शन से हमें हर पल परमात्म अनुभूति होती है।

बीमारी के दौरान उनकी संभाल इतनी कुशलतापूर्वक होती है कि हमें कभी किसी बात की चिंता नहीं होती। हर त्योहार, हर जन्मदिन, हर खुशी का उत्सव इतनी सुंदरता और भव्यता से मनाया जाता है कि आत्मा एक अव्यक्त खुशी से भर जाती है।

अपने लौकिक घर में हमने कभी अपना जन्मदिन इस तरह से नहीं मनाया था, लेकिन खुशराजी में जन्मदिन का उत्सव अलौकिक और दिव्य होता है। बाबा की याद में हर उत्सव का आनंद दोगुना हो जाता है। ईशिता दीदी का स्वभाव इतना संतुलित और दृढ़ है कि वह कभी किसी के प्रभाव में नहीं आतीं। वे परमात्मा की याद में रहकर हर कार्य को सहजता से पूरा करती हैं। उनके मुख से निकला एक-एक शब्द आत्मा के लिए वरदान के समान होता है।

ललित भाई का विनम्र स्वभाव

ललित भाई का स्वभाव भी अत्यंत विनम्र और मधुर है। उनका व्यवहार ऐसा है कि हर आत्मा को उनसे विशेष अपनापन और स्नेह का अनुभव होता है। उनकी हर बात में दिव्यता झलकती है और उनका मार्गदर्शन आत्मा के लिए प्रेरणा बन जाता है। यहाँ के सेवाधारी भाई-बहनें भी भावनापूर्वक सेवा करते हैं। यदि हमें किसी भी प्रकार की तकलीफ होती है, तो वे तुरंत सेवा के लिए उपस्थित हो जाते हैं। उनका सेवा भाव देखकर मन में यही भावना आती है — वाह बाबा, वाह मेरा भाग्य!

खुशराजी की सुविधाएं — आत्मा के लिए पूर्ण संतुष्टि

फिजियोथेरेपी डिपार्टमेंट की डॉ. मोनिका बहन बहुत प्रेमपूर्वक सेवा करती हैं। मेडिकल डिस्पेंसरी में हर प्रकार की दवाएं और चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हैं। आपात स्थिति के लिए एम्बुलेंस की 24 घंटे सुविधा रहती है। हर शुक्रवार को बैंक संबंधी कार्यों के लिए सेवाएं उपलब्ध होती हैं। योग, मुरली क्लास, अव्यक्त वाणी, और मुरली चिंतन का नियमित क्रम चलता है। यहाँ के ब्रह्मा भोजन का अनुभव हूबहू मधुबन के समान होता है।

खुशराजी — स्वर्ग का अनुभव

यहाँ का वातावरण बिल्कुल वैसा ही है जैसा सतयुग में होगा। बाबा ने अपने बच्चों के लिए खुशराजी के रूप में स्वर्ग का नमूना तैयार किया है। सतयुग में सुख की अनुभूति तो होगी ही, लेकिन खुशराजी में रहते हुए वह सुख अभी से अनुभव होता है। बाबा से हमने वायदा किया था कि — "मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में।" यह वचन यहाँ आकर पूर्ण रूप से सत्य प्रतीत होता है।

यहाँ के हर निवासी में, हर दीदी और हर सेवाधारी में बाबा की छवि झलकती है। बाबा ने अपने बच्चों के लिए जो स्वर्गीय सुख तैयार किया है, वह यहाँ आकर महसूस होता है। बाबा, आपका हृदय से धन्यवाद.....मेरे पास शब्द नहीं हैं बाबा का आभार व्यक्त करने के लिए।

मैं पूरे दिल से ईशिता दीदी, ललित भाई और खुशराजी परिवार के सभी सेवाधारी भाई-बहनों को धन्यवाद देती हूँ। उन्होंने हर परिस्थिति में हमारी सेवा की और हमें अपनापन दिया। मेरी सभी भाई-बहनों से यही निवेदन है कि यदि आपके माता-पिता या प्रियजन को खुशराजी में आने का सौभाग्य मिले, तो इसे बाबा का विशेष वरदान समझें। "वाह बाबा, वाह! वाह मेरा भाग्य, वाह!" "शुक्रिया बाबा... शुक्रिया खुशराजी... ओम शांति।"

Venkatachalam

Chennai, Age 79

Om Shanti.

I am Venkatachalam from Chennai, and I joined KhushRaazi two months ago.

I first came into contact with the Brahma Kumaris at the Adyar Centre, and what attracted me the most were the principles and the effective functioning of the organisation.

Here at KhushRaazi, all brothers and sisters are very kind, respectful towards their duties, and conduct themselves in a very polite manner—their faces are always lit up with positivity.

I am truly happy after coming here, as I have noticed a positive shift in my own behaviour and outlook.

I also feel that my nature has become calmer, and I experience a sense of happiness and confidence, all because of the peaceful and serene atmosphere here at KhushRaazi.

Before

After

Before and After Physiotherapy at KhushRaazi

विजया लक्ष्मी

हैदराबाद, उम्र 71

विश्वनाथ

हैदराबाद, उम्र 75

मैं हैदराबाद से कनेक्टेड करीमनगर सेंटर में, विजय बहिन की पालना में सन् 1981 से ज्ञान मार्ग पर युगल के साथ चल रहा हूँ। मेरी आध्यात्मिक यात्रा में मेरे साथ मेरी बेटी भी शामिल है, जो पिछले 27 वर्षों से यज्ञ में समर्पित सेंटर इंचार्ज के रूप में कार्यरत है।

हमारे सेंटर की इंचार्ज विजया बहिन और हैदराबाद की कुलदीप दीदी ने ईशिता दीदी से संपर्क करके हमारी जीवन व्यवस्था का बेहतरीन प्रबंध कर दिया। इस प्रबंध के अंतर्गत हम 4 फरवरी 2023 को पूरे व्यवस्थित होकर खुशराजी में पहुँचे। करीमनगर में रहते हुए हमारे शरीर में अनेक प्रकार की तकलीफें थीं; रेगुलर क्लास में भाग लेना भी मुश्किल होता था – हफ्ते में केवल एक बार सेंटर जा पाते थे। लेकिन खुशराजी में आने के बाद, ब्रह्मा भोजन, सुबह की अमृतवेला, नुमाशाम समेत पूरी दिनचर्या सुचारु रूप से चलने लगी।

यहाँ आने से हमारे स्वास्थ्य में भी अभूतपूर्व सुधार हुआ है। खुशराजी में इतनी सबकी केयर की जाती है कि हर महीने लौकिक और अलौकिक दोनों रूपों में जन्मदिन का धूमधाम से आयोजन किया जाता है। साल में दो-तीन बार तो पूरे परिवार को पिकनिक पर ले जाया जाता है, और हर साल मधुबन में बाबा मिलन की भी यात्रा कराई जाती है।

बहुत वर्षों तक ज्ञान में, बाबा से योग और तपस्या में जो समर्पण रहा उसका फल आज हमें इस खुशराजी में, दीदी की ममता भरी पालना में मिल रहा है। करन-करावानहार बाबा ने महारथी आदरणीय ललित भाई जी और ईशिता दीदी जी के माध्यम से हमारी आत्मा को उस स्नेह, अपनापन और देखभाल से नवाज़ा है, जो माँ के समान है।

अब तो हम युगल दो साल से खुशी में नाचते हुए इस दिव्य परिवेश में रह रहे हैं, और ऐसा प्रतीत होता है मानो समय की रफ्तार केवल दो महीनों जैसी ही हो गई हो। यदि आप भी स्वपुरुषार्थ एवं आत्मिक उन्नति की तीव्र अनुभूति चाहते हैं, तो खुशराजी में आकर इसका अनुभव कर सकते हैं। यहाँ के सेवाधारी भाई-बहनें निस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं – ऐसा तो हमारे लौकिक बच्चों में शायद ही देखने को मिलता है। यह अनुभव मुझे हर पल गदगद कर देता है।

मेरी अंतिम इच्छा यही है कि हमारे ब्राह्मण परिवार के पवित्र हाथों से ही अंतिम विदाई दी जाए।

ओम् शांति

तृप्ता अरोड़ा

ग्रेटर नोएडा, उम्र 75

मैं, पिछले डेढ़ वर्ष से खुशराजी भवन, अहमदाबाद में बाबा की छत्रछाया में आनंदमय जीवन व्यतीत कर रही हूँ। मैं लगभग 13 वर्षों से बाबा के ज्ञान में हूँ। मेरे युगल आर्मी से रिटायर्ड कर्नल थे, और हम दोनों ही बाबा की छांव में एक सुखमय जीवन जी रहे थे। कुछ ही दिनों की बीमारी के कारण मेरे युगल ने शरीर छोड़ दिया। यह मेरे जीवन की सबसे कठिन घड़ी थी।जब भी मैं बाबा के सामने बैठकर अपने दुखों को साझा करती थी, तो बाबा की टचिंग होती —
"तुम्हारा पतियों का पति बैठा है ना!" यह सुनकर आत्मा को शांति मिलती थी, लेकिन मन का खालीपन बना रहता था।

एक दिन बाबा से बातें करते हुए मैंने कहा —
"बाबा, मुझे मधुबन में बुला लो। अब इस घर में मेरा मन नहीं लग रहा।"ऐसी बात करते-करते मुझे नींद आ गई। अगली ही सुबह जब मुरली क्लास के बाद मैं सेंटर की दीदी से बात कर रही थी, तो उन्होंने बताया कि अहमदाबाद से एक युगल आए हैं, जो बता रहे थे कि वहां स्वयं बाबा ने एक मिनी मधुबन बनाया है। जहां सीनियर सिटीजन्स अपने वानप्रस्थ जीवन को बाबा की गोद में बिता सकते हैं। दीदी ने कहा — "आप वहां कुछ दिन रहकर आइए। अगर अच्छा लगे तो रहना।" मुझे लगा कि बाबा ने मेरी बात सुन ली है। अभी 12 घंटे भी नहीं बीते थे कि बाबा ने मेरी अर्जी स्वीकार कर ली। दीदी ने मेरी सारी फॉर्मालिटीज पूरी करवाई और मेरे जाने की पूरी व्यवस्था हो गई। तीन दिन के भीतर मैं बाबा के बुलावे पर खुशराजी भवन, अहमदाबाद आ गई। उस समय रात हो चुकी थी। जैसे ही मैंने भवन में प्रवेश किया, ऐसा लगा जैसे बाबा बाहें फैलाए सामने खड़े हैं और मेरा वर्षों से इंतजार कर रहे हैं। जब मैं सुबह उठी तो ऐसा अनुभव हुआ जैसे मैं इस जगह को पहले से ही जानती हूँ। ऐसा लगा जैसे मैं हमेशा से यहीं रहती थी।

सुबह की मुरली क्लास के बाद जब मैं बाहर आई, तो वातावरण की शांति और चारों ओर फैली हरियाली ने आत्मा को पूर्ण रूप से शांत कर दिया। किसी भी प्रकार का शोरगुल नहीं था। फिर जब मेरी मुलाकात ईशिता दीदी से हुई, तो एक मां जैसा एहसास हुआ। दीदी की दृष्टि से ऐसा लगा जैसे मैं अपनी लौकिक मां की गोद में बैठी हूँ। हालांकि उनकी उम्र मेरे बेटे से भी कम थी, लेकिन उनके स्नेह और अपनापन ने आत्मा को एक गहरी शांति और सुरक्षा का अनुभव कराया। यदि कभी मन में कोई दुविधा या चिंता हो तो ईशिता दीदी से बात करके हम तुरंत समाधान पाते हैं। उनका स्नेह और अपनापन आत्मा को स्थिर कर देता है। ऐसा लगा जैसे मैं अपने खोए हुए रूहानी परिवार से दोबारा मिल गई हूँ। तीसरे ही दिन मैंने निर्णय ले लिया कि अब मैं कभी भी वापस नहीं जाऊंगी। इस सुकून और खुशी की व्याख्या के लिए शब्द भी कम पड़ जाएंगे।

खुशराजी भवन की दिनचर्या अत्यंत व्यवस्थित और आध्यात्मिक उन्नति के लिए उपयुक्त है। यहाँ बुजुर्गों को अनुभवी आत्मा के रूप में देखा जाता है। हमें हमारे टैलेंट के अनुसार सेवा के अवसर मिलते हैं। यहाँ की सेवा में अपनापन और स्नेह है। तन की कोई भी व्याधि हमें विचलित नहीं करती। यहाँ हमें बुजुर्ग नहीं, बल्कि अनुभवी आत्मा समझा जाता है। गरबा नृत्य में सभी वानप्रस्थी इतनी खुशी और उमंग से नृत्य करते हैं कि उम्र का एहसास ही नहीं होता। सबसे बड़ी बात यह है कि यहां का भोजन — बाबा का भोग लगा हुआ — इतना शुद्ध और सात्विक होता है कि तन और मन दोनों की पवित्रता स्वतः ही बढ़ जाती है।

यहाँ का शांत, हरियाली से भरा वातावरण और सेवा का अपनापन आत्मा को रोज़ाना शक्ति और खुशी से भर देता है। ऐसा अनुभव होता है कि जैसे बाबा ने एक स्वर्ग इस धरती पर उतार दिया है। "अब मैं एक शहजादी की तरह हूँ। बाबा की गोद में बैठी हूँ। अब कोई भय, कोई चिंता, कोई उलझन नहीं। "अब मैं एक नई ऊर्जा और उमंग के साथ अपने वानप्रस्थ जीवन का हर पल आनंद ले रही हूँ।"

ओम शांति... ओम शांति... ओम शांति... "शुक्रिया बाबा, शुक्रिया दीदी।" "अब कोई भी इच्छा शेष नहीं। अब तो सिर्फ बाबा की याद और उनकी पालना ही मेरा संपूर्ण जीवन है।"

माधुरी गुप्ता

उत्तर प्रदेश, उम्र 74

सत्य नारायण गुप्ता

उत्तर प्रदेश, उम्र 80

हर घर, हर पल, हर कंठ में जिनका नाम है, मेरी लेखनी, मीठे बाबा, प्यारे बाबा, करती-करती तुम्हें प्रणाम है।

मेरा जन्म 21 जनवरी 1952 को हुआ। शिक्षा-दीक्षा, लालन-पालन और गृहस्थी के संचालन के बीच मुझे 1993 में सरकारी स्कूल में नौकरी मिली, जहाँ से मैं 2014 में सेवानिवृत्त हुई। मेरे जीवन का स्वर्णिम मोड़ तब आया, जब उसी स्कूल की प्रधानाध्यापिका के माध्यम से मुझे शिव बाबा का दिव्य परिचय मिला। एक बड़ी परीक्षा तब आई जब 7 जून 2023 को मेरा एक बड़ा ऑपरेशन हुआ और 10 महीने बिस्तर पर बिताने पड़े। इस दौरान मैंने बाबा से संकल्प किया कि —
"बाबा, अब मेरी पालना तुम्हारे ही हाथों में है।"
इस कठिन समय में भी बाबा ने मेरा हाथ थामे रखा। मैंने ऑनलाइन सेवा का सिलसिला जारी रखा। कोर्स कराना, मुरली सुनाना, मोटिवेशनल स्पीच देना और मुरली को कविता में रूपांतरित करके उसे रोचक बनाना — ये सब बाबा की कृपा से ही संभव हो पाया। इसी बीच ग्रेटर नोएडा के डॉक्टर बीके ललित ने मुझे YouTube से जोड़ दिया। लेकिन मेरे जीवन की सबसे बड़ी हलचल तब हुई, जब मेरी बहू ने अनिच्छा अशुद्ध अन्न देना शुरू किया। धारणा टूटने के डर से मैंने बाबा से संकल्प किया —
"मीठे प्रभु, मैंने आपको बेटा बनाया है, तो अब आत्मा का उद्धार करो।"

इसके बाद बाबा की कृपा से एक चमत्कार हुआ। 21 दिन के योग के बाद टीचर बहन का फोन आया कि मधुबन की प्रीति यादव से संपर्क करो। उन्होंने मुझे अरुण भाई का नंबर दिया। फरिश्ते के माध्यम से फॉर्म भरने, आने-जाने और रहने-खाने की व्यवस्था हो गई। 27 जून 2024 को बाबा ने मुझे खुशराजी भवन में पलकों की पालकी में बिठाकर बुला लिया। तब से लेकर अब तक के 9 महीनों में मैंने हर त्योहार, हर खुशी, हर आयोजन को इतने सुंदर और संगठित रूप से मनाते देखा है कि आत्मा गदगद हो गई। यहां की दिनचर्या, अनुशासन और दीदी जी की पालना ने आत्मा को परम सुख और शांति का अनुभव कराया है। अब मैं हर चिंता से मुक्त हूँ। यहाँ की दिनचर्या न केवल आत्मा को संतुलित करती है, बल्कि आत्मा में दिव्य गुणों का संचार भी करती है। यहाँ का वातावरण इतना शांत, मधुर और पवित्र है कि हर क्षण आत्मा को शक्ति और आनंद का अनुभव होता है।

खुशराजी का सुरक्षित और शांतिपूर्ण वायुमंडल

यहाँ ठंडे और गर्म पानी की उत्तम व्यवस्था है। आठवीं मंजिल तक के लिए पुष्पक विमान जैसी आधुनिक लिफ्ट की सुविधा है। सेवाधारियों का स्नेह, बड़े भाई और दीदी जी की पालना आत्मा को हर पल सुरक्षित और संरक्षित महसूस कराती है।

यहाँ के सेवाभाव और अपनापन ने मुझे इस तरह बांध लिया है कि मैं लौकिक दुनिया की हर चिंता से मुक्त हो गई हूँ। यहाँ की मधुरता और दिव्यता ने आत्मा के संकल्पों को परिपूर्ण बना दिया है। दीदी जी की छत्रछाया ने मन से लौकिक बातें रिजेक्ट कर, अलौकिक बातों को सिलेक्ट करना सिखाया है। अब आत्मा परफेक्ट बनने के मार्ग पर है। संगम के इस अंतिम समय को मैं सलाम करती हूँ। बाबा की छत्रछाया को मैं प्रणाम करती हूँ। प्यारी प्रभारी बहनों और भाइयों को अभिनंदन है, स्वागत है। "बाबा हमारे साथ हैं — इसलिए दिन-रात मैं गीत गुनगुनाती हूँ:" "बाबा मेरे साथ है, डरने की क्या बात है। बाबा का साथ है तो दुनिया अच्छी लगती है, हमारे दिन भी अच्छे हैं और हमारी रातें भी अच्छी हैं।" मेरी आत्मा हृदय से बाबा, ईशिता दीदी जी और ललित भाई साहब का कोटि-कोटि धन्यवाद करती है। बाबा की कृपा से ही मुझे इस दिव्य परिवार का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला है।

ओम शांति... ओम शांति... ओम शांति...

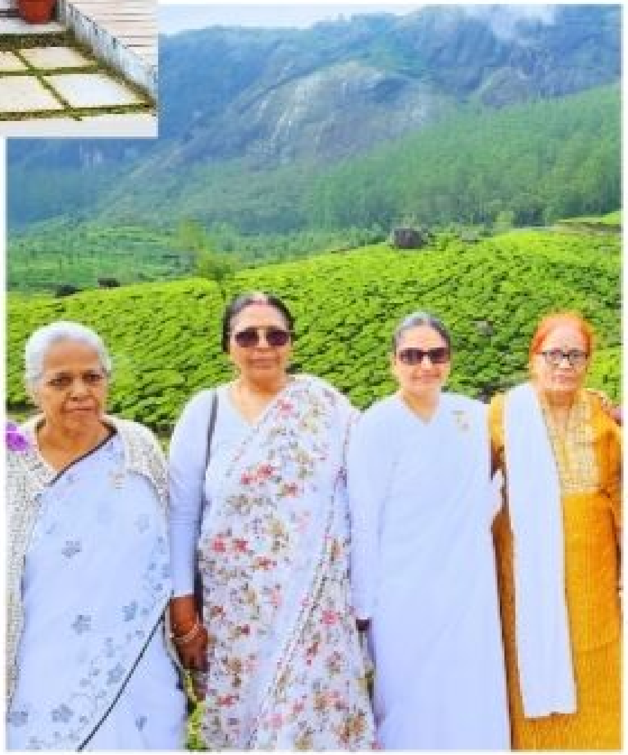

SOUTH INDIA

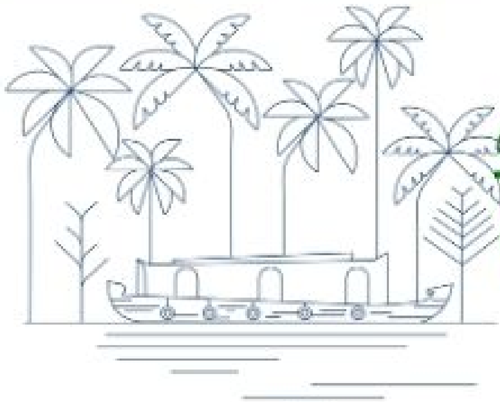

केरल

KERALA TAMILNADU

लतिका गांगुली

वाराणसी, उम्र 63

डॉ. शिवराम गंगोपाध्याय

वाराणसी, उम्र 71

मैं Prof. Dr. Shivaram Gangopadhyaya, Gold Medalist, एक ऐसे भाग्यशाली आत्मा के रूप में स्वयं को अनुभव करता हूँ, जिसे परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव भगवान ने एक विशेष मार्गदर्शन के तहत ब्रह्माकुमारीज के दिव्य परिवार का अंग बनने का सौभाग्य प्रदान किया। मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य ज्ञान और अध्ययन-अध्यापन ही था। मैं Banaras Hindu University के वैदिक दर्शन विभाग में Assistant Professor के पद पर आसीन था और काशी के विद्वत समाज में व्याकरण शास्त्र और न्याय-वैशेषिकदर्शन शास्त्र के परम्परागत तार्किक दार्शनिक के रूप में मेरी विशेष पहचान थी।

परमात्मा की ईश्वरीय योजनाएं कितनी गूढ़ और दिव्य होती हैं, यह तब समझ में आया जब मेरी युगल बी.के. लतिका गांगुली ने मेरी जीवन यात्रा को एक नए मोड़ पर ला खड़ा किया। बी.के. शिवानी दीदी के गहरे व्याख्यान ने हमें ईश्वर की शक्ति और उसके वास्तविक स्वरूप का परिचय कराया। इस अलौकिक अनुभव के परिणामस्वरूप, मैं और मेरा पूरा परिवार 19 फरवरी 2011 को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय परिवार में तन, मन और धन से समर्पित हो गए। बाबा के श्रीमत के अनुसार हम दोनों ने बनारस जोन के अंतर्गत जवाहर नगर, भेलूपुर, वाराणसी सेवास्थान से आध्यात्मिक सेवा की शुरुआत की।

भाग्य का अनमोल बरदान

"उपर्युपरिबुद्धीनां चरन्तीश्वरबुद्धयः"

(अर्थात् जिनकी बुद्धि परमात्मा में स्थिर है, वे सदैव दिव्यता के पथ पर चलते हैं।)

परमात्मा की अलौकिक योजना का एक महत्वपूर्ण पड़ाव तब आया जब मेरे लौकिक पुत्र बी.के. अमित भाई भी बाबा के परिवार में समर्पित हो गए। लेकिन इस भव्य ड्रामा के एक और दृश्य में, मेरी प्रिय पुत्री बी.के. तापसी बहन वर्ष 2020 में बाबा की गोद में समा गईं। उस कठिन घड़ी में भी परमात्मा की शक्ति और ज्ञान के सहारे हमने मोह के बंधनों को सहज ही पार कर लिया। बाबा की मुरलियों में समझाया गया "कुछ भी नया नहीं है" का गूढ़ सत्य उस समय मेरी आत्मा को संबल प्रदान कर रहा था।

31 मार्च 2018 को मैंने वैदिक दर्शन विभाग से सेवानिवृत्ति ली। परंतु अध्ययन और अध्यापन का क्रम रुका नहीं। आज भी मैं छात्रों को पढ़ाता हूँ और Ph.D कराता हूँ। मणिपुर विश्वविद्यालय से संबंधित होकर Value Education Department में Professor cum Research Supervisor के रूप में सेवाएं प्रदान कर रहा हूँ। श्रीमद्भगवद्गीता महासम्मेलन और वैल्यू एजुकेशन मीटिंग में वक्ता के रूप में मधुबन बार-बार आना होता है।

खुशराजी का दिव्य आह्वान

मेरी युगल बनारस में अकेली रहती थीं। इसलिए मधुबन के समीप स्थायी निवास का विचार मेरे मन में जागृत हुआ। बाबा ने मेरी इस इच्छा को सुन लिया। कुछ ही समय बाद YouTube पर मैंने बी.के. CA ललित भाई साहब का खुशराजी से संबंधित वीडियो देखा। उनकी सहजता और स्पष्टता ने मुझे भीतर तक प्रभावित किया। मेरे पुत्र बी.के. अमित भाई का बी.के. CA ललित भाई साहब से अच्छा संबंध था। अत: मैंने सीधे ललित भाई साहब से संपर्क किया और उनके उत्तरों से मैं पूर्ण रूप से संतुष्ट हो गया। इसके बाद मेरी युगल बी.के. लतिका माता मधुबन की माताओं की भट्टी में सम्मिलित होने गईं। लौटते समय बी.के. अमित भाई के साथ सभी खुशराजी Senior Citizens Research & Care Centre, Ahmedabad, Gujarat को देखने गए। खुशराजी का वातावरण, वहां का शांतिमय वाइब्रेशन और सेवाधारियों का प्रेमपूर्ण व्यवहार देखकर मेरी युगल ने वहीं रहने का निश्चय कर लिया।

खुशराजी – एक स्वर्गिक अनुभव

सितंबर 2023 के प्रथम सप्ताह में जब मैं मधुबन आया तो बी.के. ईशिता दीदी से फोन पर संपर्क हुआ। ईशिता दीदी से मेरा यह पहला संवाद ही एक आत्मिक अनुभव बन गया। उनके मातृसुलभ स्नेह, सहजता और व्यावहारिक ज्ञान ने मुझे भीतर तक प्रभावित किया। जब मैं खुशराजी पहुंचा तो दीदी ने आत्मीयता से मेरा स्वागत किया। खुशराजी की संपूर्ण व्यवस्थाएं अत्यंत अनुशासित और उच्च स्तर की हैं। वहां के सेवाधारी आत्मिक प्रेम और पूर्ण समर्पण भाव से सेवा करते हैं। मैंने तत्काल स्थायी रूप से वहां रहने का निर्णय लिया और आवेदन पत्र भी जमा कर दिया। सितंबर 2023 के अंत में मैं अपनी युगल के साथ स्थायी रूप से खुशराजी में रहने आ गया।

खुशराजी की दिव्यता और अनुशासन

खुशराजी में एक आदर्श दिनचर्या का पालन होता है। यहां की व्यवस्था मधुबन के समान है।

यहां का भोजन पूरी तरह सात्विक और स्वास्थ्यवर्धक है। कपड़ों की धुलाई और प्रेस की भी उत्तम व्यवस्था है। चिकित्सा की संपूर्ण सुविधाएं हैं – प्रशिक्षित नर्स, एम्बुलेंस, और निकट के अस्पतालों से सीधा संपर्क।

ईशिता दीदी का आत्मीय व्यवहार, स्नेह और देखरेख ने खुशराजी को एक आध्यात्मिक आश्रय बना दिया है। उनकी योग शक्ति और सहज नेतृत्व से खुशराजी की हर आत्मा सशक्त और संतुष्ट है। बी.के. CA ललित भाई साहब का सरल स्वभाव, मधुर व्यवहार और ज्ञान की गहराई भी खुशराजी के वातावरण को दिव्यता से भर देती है।

"बाबा, आपकी इस दिव्य तपोभूमि का हिस्सा बनकर हम सब धन्य हैं।"

ओम् शांति।

अनुसूया सोलंकी

अहमदाबाद, उम्र 71

मैं स्वयं को सबसे सौभाग्यशाली आत्मा मानती हूँ कि बाबा ने मेरी आत्मा को इस दिव्य जीवन का वरदान दिया। जून 2023 से मैं खुशराजी में बाबा की पालना में पल रही हूँ और मदर ईशिता दीदी के ममता भरे आँचल में आत्मिक स्नेह और संरक्षण पा रही हूँ। यहां का शांतिमय वातावरण, दिव्य दिनचर्या और आत्मिक परिवार की सौहार्दता ने मेरे जीवन को एक नई दिशा और स्थिरता प्रदान की है।

बाबा की असीम कृपा से जब मैं खुशराजी में आई, तब मन में कई प्रश्न थे – कैसा वातावरण होगा? क्या वहां की दिनचर्या मेरे लिए सहज होगी? लेकिन बाबा ने हर प्रश्न का उत्तर अपनी दिव्य पालना के माध्यम से दिया। बाबा की स्नेहमयी शक्ति और ईशिता दीदी का मातृस्वरूप स्नेह हर संदेह और असमंजस को समाप्त कर चुका है। अब जब घर जाती हूँ तो वहां मन नहीं लगता। यहां की दिव्यता और बाबा के vibrations में जो शांति है, वह कहीं और अनुभव नहीं होती।

खुशराजी की दिव्य दिनचर्या :

खुशराजी की दिनचर्या बिल्कुल शांतिवन और मधुबन के समान है। यहां समय का ऐसा सुचारु रूप से पालन होता है कि आत्मा निरंतर ऊर्जावान और स्थिर रहती है।

यहां का भोजन पूरी तरह सात्विक और स्वास्थ्यवर्धक है। ब्रह्मा भोजन इतना स्वादिष्ट और पवित्र होता है कि आत्मा तक तृप्त हो जाती है। बाबा की दिव्य पालना में एक-एक कौर में परमात्मा की अनुभूति होती है।

मखुशराजी – आत्मिक और शारीरिक देखभाल का दिव्य केंद्र है।

खुशराजी में सिर्फ आत्मा की नहीं, शरीर की भी संपूर्ण देखभाल होती है। यहां 24 घंटे बी.के. नर्स की व्यवस्था है। आपातकालीन स्थिति के लिए अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हैं। फिजियोथेरेपी के लिए भी एक अनुभवी डॉक्टर, डॉ. मोनिका बेन, नियमित रूप से सेवा दे रही हैं। किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य समस्या का तत्काल समाधान यहां संभव है।

सेवाधारी भाई-बहनों का व्यवहार इतना आत्मीय और प्रेमपूर्ण है कि कभी लगता ही नहीं कि हम घर से बाहर हैं। सभी सेवाधारी भाई-बहनें हमें परिवार के सदस्य की तरह देखभाल करते हैं। हमारे वस्त्र रोज धुलकर प्रेस किए हुए हमारे कमरे तक पहुंचते हैं। हर हफ्ते बेडशीट बदली जाती है। सफाई व्यवस्था इतनी उत्तम है कि सात मंजिला इस भवन का हर कोना चमकता है। इस दिव्यता और स्वच्छता का स्तर अपने घरों में भी मिलना कठिन है।

ईशिता दीदी का मातृस्वरूप स्नेह, उनकी सहजता और उनकी पालना खुशराजी की आत्मा है। दीदी हर माता-पिता की उम्र, स्वास्थ्य और रुचि के अनुसार उनकी देखभाल करती हैं।

उनके लिए हर त्यौहार को उमंग-उत्साह के साथ मनाना जरूरी है। जन्मदिन पर केक कटिंग, भव्य सजावट और गीत-संगीत के साथ हर आत्मा को विशेष अनुभव कराया जाता है।

बी.के. CA ललित भाई साहब का व्यवहार भी उतना ही सरल और आत्मीय है। जब भी वे खुशराजी आते हैं, सभी आत्माओं के व्यक्तिगत समाचार पूछते हैं, मुरली क्लास कराते हैं और अपनी रचनात्मकता से सभी को प्रोत्साहित करते हैं। उनका एक-एक शब्द आत्मा में एक नई ऊर्जा का संचार करता है।

खुशराजी – तपोभूमि और जीवन का स्वर्णिम पड़ाव:

खुशराजी वास्तव में ब्राह्मण जीवन के अंतिम स्वर्णिम पड़ाव के समान है। यहां आत्मा को परमात्मा से मिलने का सीधा मार्ग मिल जाता है। हम सब आत्माएं यहां एक सशक्त और दिव्य वातावरण में परिपूर्ण जीवन जी रहे हैं।

बाबा ने इस स्वर्णिम अवसर को हमें प्रदान किया है। बाबा की श्रीमत अनुसार पुरुषार्थ करते हुए हम यहां स्वयं को आत्मिक रूप से शक्तिशाली बना रहे हैं। यहां का दिव्य अनुशासन, शांतिमय वातावरण और प्रेमपूर्ण सेवा आत्मा को सहजता से सशक्त बनाती है।

खुशराजी – स्वर्ग का प्रत्यक्ष अनुभव:

जब हम यहां के अनुभव को शब्दों में व्यक्त करते हैं, तो लगता है जैसे स्वर्ग के सुख और शांति को साक्षात् अनुभव कर रहे हैं। मेरी आत्मा में यह अनुभूति प्रतिक्षण जाग्रत रहती है कि यह बाबा की विशेष योजना है, जो हमें इस दिव्य तपोभूमि का हिस्सा बना रही है।

बाबा ने इस वानप्रस्थ जीवन को वास्तव में सुख, शांति और आनंद से भर दिया है। हर आत्मा के लिए यह अनुभव एक दिव्य वरदान है। हम यहां दिन-प्रतिदिन खुशी और शांति में जी रहे हैं। हमें इस दिव्य अवसर का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बाबा ने हमें यहां आकर "खुश" और "राजी" बना दिया है।

"किन शब्दों में आपका धन्यवाद करें,
दिन-रात की यह सेवा हम याद करें।
वाह बाबा वाह, वाह मेरा भाग्य वाह!"
ओम् शांति।

प्रतिमा लाल

कोलकाता, उम्र 70

मैं प्रतिमा लाल, मूल रूप से भागलपुर, बिहार की निवासी हूँ। मेरे बेटे का कार्यस्थल कोलकाता में होने के कारण मैं भी कोलकाता आकर रहने लगी। नयी जगह, नया माहौल —शुरुआत में थोड़ा अलग और असहज महसूस हो रहा था। लेकिन कहते हैं न कि जब आत्मा सच्चे मार्ग की तलाश करती है, तो बाबा खुद उस राह को आसान बना देते हैं।

कोलकाता में ही मेरी मुलाकात पद्मा दीदी से हुई। बातचीत के दौरान उन्होंने मुझे ब्रह्माकुमारी संस्था के बारे में विस्तार से बताया। उनकी मधुर वाणी और शांत स्वभाव ने मेरे मन को गहराई से छू लिया। उनके मार्गदर्शन से मैंने वहाँ के सेंटर में राजयोग का कोर्स किया और नियमित रूप से मुरली सुनने लगी। धीरे-धीरे बाबा के ज्ञान और योग से मेरे जीवन में एक नई ऊर्जा और शांति का संचार हुआ।

थोड़े ही समय बाद मुझे खुशराजी वरिष्ठ नागरिक देखभाल और अनुसंधान केंद्र के बारे में पता चला। पद्मा दीदी के सहयोग और मार्गदर्शन से मैंने वहाँ जाने का निश्चय किया। जब मैं पहली बार खुशराजी भवन पहुँची, तो मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे बाबा ने मेरे लिए यह विशेष व्यवस्था की हो। बाबा की पालना में आने का यह सौभाग्य मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

खुशराजी भवन में आने के बाद मेरे जीवन की दिशा पूरी तरह से बदल गई। यहाँ के दिव्य वातावरण, शुद्ध और सात्विक ब्रह्मा भोजन, अनुशासित दिनचर्या और भाई-बहनों के संगठित प्रेम ने मेरे मन को स्थिरता और शांति प्रदान की। यहाँ का हर एक पल बाबा की याद से भरा होता है। अमृतवेला से लेकर रात के विश्राम तक हर कार्य बाबा के नियम अनुसार होता है, जिससे मन और आत्मा को पूर्ण संतुष्टि मिलती है।

यह ब्राह्मण परिवार मेरे लिए सच में एक अलौकिक परिवार बन गया है। यहाँ के भाई-बहन जिस आत्मीयता और प्रेम से सेवा करते हैं, वह मन को गहराई तक छू जाता है। तीनों समय का ब्रह्मा भोजन शुद्ध, सात्विक और प्रेमपूर्वक परोसा जाता है, जिससे आत्मा भी शुद्ध और पवित्र अनुभव करती है। मुरली सुनने के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं होती—बस अपने कमरे से लिफ्ट लेकर सीधे मुरली कक्ष में पहुँच जाती हूँ।

खुशराजी भवन की इंचार्ज आदरणीया ईशिता दीदी की पालना तो अवर्णनीय है। उनकी मधुर वाणी, स्नेहपूर्ण व्यवहार और सहज मार्गदर्शन से हर आत्मा को विशेष अनुभव होता है। ऐसा लगता है जैसे बाबा ने उनके भीतर सारी विशेषताएँ भर दी हैं। उनके प्रेम और देखभाल से मन को संबल और स्थिरता प्राप्त होती है।

यहाँ की दिनचर्या पूरी तरह से मधुबन के नियम अनुसार चलती है। नियमित योग, मुरली, ब्रह्मा भोजन और संगठित सेवा से मन हर क्षण बाबा की याद से जुड़ा रहता है। समय-समय पर पिकनिक, खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है, जिससे मन तरोताजा और ऊर्जावान बना रहता है। हर महीने जन्मदिन उत्सव और बड़े-बड़े त्यौहार बहुत ही सुंदर रीति से मनाए जाते हैं, जिससे हर आत्मा को अपनापन अनुभव होता है।

मुझे इस बात का अहसास हो गया है कि बाबा ने मुझे इस भवन में भेजकर मेरे जीवन के हर अभाव को पूर्ण कर दिया है। अब बाबा की पालना में रहकर मुझे अपने जीवन की सही दिशा मिल गई है। अब मेरी आत्मा का एक ही लक्ष्य है—बाबा की आज्ञा अनुसार चलना और उनकी सेवा में समर्पित रहना। अब दिल से यही भाव उठते हैं — "बाबा, तुमने मेरी हर कमी पूरी कर दी, अब मैं तुम्हारी सेवा में अपना सब कुछ समर्पित करती हूँ!"
शुक्रिया बाबा ! शुक्रिया पद्मा दीदी !
शुक्रिया ईशिता दीदी और पूरे खुशराजी परिवार को !
ओम शांति।

किरण मुसावड

पुणे, उम्र 68

मैं पिछले 25 वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान में हूँ। करीब 10 वर्षों से मेरे मन में एक दृढ़ संकल्प था कि मुझे गृहस्थ जीवन से अलग रहकर बाबा की सेवा करनी है और अपना पुरुषार्थ करना है। घर के बंधनों में रहकर यह पूरी तरह संभव नहीं था, क्योंकि कितनी भी कोशिश कर लें, सभी को संतुष्ट करना कठिन होता है।

मेरा संकल्प और मधुबन यात्राः नवंबर 2023 में जब मैं मधुबन बाबा मिलन के लिए गई, तो वहाँ जाकर मेरा संकल्प और अधिक दृढ़ हो गया। तभी मैंने निर्णय लिया कि अब मुझे खुशराजी, अहमदाबाद जाना है। जब दो साल पहले इसका उद्घाटन हुआ था, तभी से मेरे मन में यह विचार था।

मधुबन से सीधा मैं एक महीने के ट्रायल पीरियड के लिए खुशराजी आ गई। यहां का वातावरण मुझे बहुत ही दिव्य और मधुबन जैसी अनुभूति देने वाला लगा। दिनचर्या में सुबह अमृतवेला योग, फिर मुरली और हर घंटे ट्रैफिक कंट्रोल, नुमाशाम का योग, और रात 9 बजे अव्यक्त मुरली— यह सब घर पर संभव नहीं था।

खुशराजी का दिव्य अनुभवः घर में गृहिणी का मुख्य कार्य भोजन बनाना होता है, लेकिन यहां उससे पूरी तरह से मुक्त होकर संगठन और सेवा में मन लगाने का अवसर मिला। चाय, नाश्ता और भोजन सब कुछ तैयार मिलता है, वह भी पवित्र भाई-बहनों के हाथों से बना हुआ।

यहाँ पर त्योहार भी बड़े धूमधाम से मनाए जाते हैं, जिससे आत्मा को आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ पारिवारिक स्नेह भी मिलता है। यहाँ का माहौल मुझे इतना प्यारा लगा कि मैंने सारा जीवन यहीं बिताने का दृढ़ निश्चय कर लिया। तीन महीने बाद मैं हमेशा के लिए खुशराजी आ गई।

एक कठिन परीक्षा और बाबा की कृपाः यहाँ आने के करीब 10 महीने बाद मेरे साथ एक दुर्घटना हो गई। मैं अपने कमरे में स्लिप होकर गिर गई, जिससे मेरा कंधा (सोल्डर) बुरी तरह से डिसलोकेट हो गया और फ्रैक्चर भी हो गया। यह मेरे लिए एक बड़ी परीक्षा थी।

उस समय खुशराजी परिवार ने जो सेवा और स्नेह दिया, उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। ललित भाई जी और हमारी ईशिता दीदी जी उस समय मधुबन में एक कॉन्फ्रेंस में व्यस्त थे, फिर भी वे लगातार मेरी तबीयत की जानकारी लेते रहे और दीप्ती बहन से संपर्क बनाए रहे। उनकी केयरिंग नेचर मुझे बहुत प्रभावित कर गई। मुझे तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया और यहाँ के सभी भाई-बहनों ने मेरे लिए विशेष योग और दुआएँ कीं, जिससे मैं शीघ्र ही स्वस्थ होने लगी।

खुशराजी में सेवा, प्यार और उपचार: यहाँ हर प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। फिजियोथैरेपी के लिए अत्याधुनिक मशीनें मौजूद हैं और मेरा पूरा इलाज यहीं हुआ। हर दिन जब भी कोई भाई-बहन मेरी सेवा करते, तो मेरी आँखों में आँसू आ जाते। मुझे महसूस हुआ कि इतना प्यार और देखभाल शायद अपने घर में भी नहीं मिल पाती। बाबा का अनंत आभार। मैं बाबा की अनंत कृपा के लिए हृदय से कृतज्ञ हूँ। उन्होंने मेरी परीक्षा को सूली से काँटा बना दिया। आज मैं फिर से स्वस्थ हूँ और अपने आध्यात्मिक जीवन में पूरी तरह रम गई हूँ। ओम शांति

अर्चना बंसल

दिल्ली, उम्र 67

मेरी फैमिली दिल्ली से कर्नाटक शिफ्ट हो गई थी। नई जगह, नई भाषा—इस बदलाव ने मेरे जीवन में कई चुनौतियाँ खड़ी कर दी थीं। भाषा की समस्या के कारण खुद को वहाँ सहज महसूस नहीं कर पा रही थी। मुरली सुनने का बहुत मन होता था, लेकिन सेंटर काफी दूर होने के कारण कभी जा पाती थी, तो कभी नहीं। इस वजह से मन में एक अधूरापन और असंतोष सा बना रहता था।

लेकिन कहते हैं न कि जब सच्ची श्रद्धा और समर्पण होता है, तो बाबा खुद राह दिखाते हैं। एक दिन मैंने YouTube पर खुशराजी भवन का एक वीडियो देखा। वह वीडियो देखकर मेरे मन में तुरंत वहाँ जाने की तीव्र इच्छा जागी। ऐसा लगा जैसे बाबा ने स्वयं मेरे लिए यह संकेत दिया हो। मैंने निश्चय किया कि मुझे खुशराजी भवन जाकर बाबा के सान्निध्य का अनुभव लेना है।

जब मैं पहली बार खुशराजी भवन पहुँची, तो ऐसा महसूस हुआ जैसे बाबा ने मेरे लिए ही इस भवन का निर्माण करवाया हो। यहां के वातावरण में प्रवेश करते ही मन एक अलौकिक शांति से भर गया। जैसे ही मैंने ब्रह्मा भोजन ग्रहण किया, मन में पवित्रता और शांति का अनुभव हुआ। यहाँ तीनों समय का शुद्ध और सात्विक ब्रह्मा भोजन मिलना मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं था।

भाई-बहनों के साथ संगठित होकर प्रेमपूर्वक बैठकर भोजन करने से मन में आत्मीयता और एकता की अनुभूति होने लगी। शुद्ध और पवित्र हाथों से बना भोजन मन और आत्मा, दोनों को शुद्ध और शांत करने लगा।

धीरे-धीरे मेरी धारणा भी मजबूत होने लगी। पहले जो पुरुषार्थ ढीला पड़ गया था, वह यहाँ के अलौकिक वातावरण और दीदी की पालना के कारण तीव्र हो गया। खासतौर पर शाम के योग में जब सभी भाई-बहन संगठित होकर बैठते हैं, तो एक विशेष ऊर्जा का संचार होता है। इस योग से मेरे अंदर शक्ति का संचार हुआ और मेरे पुरुषार्थ को नई दिशा मिली। जैसा जीवन मैंने हमेशा अपने मन में सोचा था, वैसा ही जीवन मुझे यहाँ मिल गया।

अब लौकिक परिवार की याद भी धीरे-धीरे धुंधली होने लगी। यहाँ के अलौकिक ब्राह्मण परिवार ने मुझे इतनी आत्मीयता और अपनापन दिया कि मेरा मन हर क्षण खुशी से भरा रहने लगा। अमृतवेला, ब्रह्मा भोजन और मुरली सुनने की व्यवस्था इतनी सहज और सुगम है कि कहीं बाहर जाने की आवश्यकता ही नहीं होती। बस अपने कमरे से निकलकर लिफ्ट से आठवीं मंज़िल पर पहुँचते ही सारा संगठित वातावरण मिल जाता है। पूरा दिन ट्रैफिक कंट्रोल भी व्यवस्थित रूप से हो जाता है।

मुझे तो ऐसा लगता है जैसे मैं किसी मिनी मधुबन में रहने लगी हूँ! यहाँ के सेवाधारी भाई-बहन अत्यंत शिक्षित होने के बावजूद बड़े प्रेम और सम्मानपूर्वक सेवा करते हैं। उनके चेहरे पर सदैव मधुर मुस्कान और आत्मीयता की झलक मिलती है।

खुशराजी की इंचार्ज, आदरणीया ईशिता दीदी की पालना का तो कोई बर्णन ही नहीं किया जा सकता। ऐसा लगता है जैसे बाबा ने उनमें सभी दिव्य गुण कूट-कूटकर भर दिए हैं। जिस प्रकार एक माता-पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं, उसी प्रकार ईशिता दीदी हमें प्रेम और वात्सल्य से संभालती हैं। उनके कोमल शब्द और स्नेह से भरी दृष्टि मन को संबल और आत्मबल प्रदान करती है।

यहाँ हमें हर सुविधा सहज रूप से प्राप्त है। कपड़े धुलकर प्रेस किए हुए मिलते हैं। स्वच्छता और शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जाता है। समय-समय पर पिकनिक, एक्टिविटीज़, गेम्स आदि का आयोजन होता है, जिससे मन तरोताज़ा रहता है। हर महीने जन्मदिन बड़े उत्साह और प्रेम से मनाया जाता है, जिससे हर आत्मा को विशेष होने का अनुभव होता है। ऐसा जीवन जीने का मेरा सपना था, जिसे बाबा ने यहाँ लाकर पूरा कर दिया। अब दिल से यही निकलता है—"बाबा, तुमने पूरे किए अरमान हमारे, हम भी करें पूरे अरमान तुम्हारे!" शुक्रिया बाबा! शुक्रिया ललित भाई जी और ईशिता दीदी जी! अब इस अलौकिक जीवन को बाबा की आज्ञा अनुसार चलाना ही मेरा लक्ष्य है। ओम शांति।

प्रमिला देवी

काठमांडू, उम्र 66

मेरा नाम प्रमिला देवी है, और मैं काठमांडू से आई हूँ। मेरे आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत बिहार से हुई थी। जीवन के सफर में एक मोड़ तब आया जब मेरे लौकिक पति का निधन हो गया। उसके बाद हम गांधीनगर आ गए, लेकिन मन में एक अनकही प्यास थी—एक ऐसी शांति और ठिकाने की खोज, जहाँ आत्मा को गहन शांति और दिव्यता का अनुभव हो।

एक दिन YouTube पर 'खुशराज़ी का उद्घाटन महोत्सव' का वीडियो देखा। वह दृश्य मेरे हृदय को छू गया—वहाँ की दिव्यता, व्यवस्थाओं की सुव्यवस्था, और परमात्म प्रेम की अनुभूति ने मानो मेरे मन को मोह लिया। ऐसा लगा जैसे वर्षों से संजोया गया मेरा एक सपना मूर्त रूप लेने जा रहा है। उसी क्षण मैंने निर्णय लिया कि मुझे इस अद्भुत स्थान पर अवश्य जाना है। कुछ समय पश्चात्, बाबा की कृपा से मुझे यहाँ एडमिशन प्राप्त हो गया।

जैसे ही मैं यहाँ पहुँची, बाबा का कमरा मुझे सबसे अधिक मनमोहक स्थान लगा। ऐसा प्रतीत हुआ मानो स्वयं बाबा ने अपनी संतान को प्रेमपूर्वक अपने घर बुला लिया हो। यहाँ के शांत, दिव्य और शक्तिशाली वातावरण में दो-तीन दिन बिताने के बाद मैंने निश्चय कर लिया कि यही मेरा सच्चा घर है। मैंने दीदी से चर्चा की, और मेरे बेटे ने सारी व्यवस्थाएँ कर दीं।

यहाँ के हर क्षण में बाबा की पालना अनुभव होती है। उनकी श्रीमत का पालन करते हुए, उनकी दिनचर्या में रमते हुए, ब्रह्मा भोजन का अमृत ग्रहण करते हुए, जीवन सहज और सार्थक लगने लगा है।

यहाँ के वातावरण में समय बिताने से ऐसा प्रतीत होता है मानो सारी चिंताएँ स्वतः ही समाप्त हो गई हैं। सच कहूँ तो, बाबा का घर मेरे हृदय का सबसे प्रिय स्थान बन गया है।

ईशिता दीदी जी का स्नेह, उनकी ममता और उनका दिव्य मार्गदर्शन मेरे लिए वरदान के समान है। उनके सान्निध्य में न केवल मुझे स्नेह और सहारा मिला, बल्कि हर समस्या का समाधान भी सहज रूप से प्राप्त होता है। उनकी प्रेरणाओं से जीवन की हर कठिनाई सहजता से पार हो जाती है।

खुशराज़ी की एक विशेषता जो इसे और भी अद्भुत बनाती है, वह है यहाँ की सुव्यवस्थित जीवनशैली। हर कार्य समय पर और मर्यादा में संपन्न होता है, जिससे किसी भी प्रकार की असुविधा या अव्यवस्था का अनुभव नहीं होता।

हम सब एक सुंदर, दिव्य परिवार की तरह प्रेम और सहयोग से रहते हैं अंततः मेरा अनुभव यही कहता है कि हर ब्राह्मण आत्मा का जो परम लक्ष्य होता है—फरिश्ता से देवता बनने का—वह इस पवित्र स्थान में रहकर पुरुषार्थ करने से सहज ही संभव हो जाता है।

मुझे परमात्मा से यही प्रार्थना है कि मैं अंतिम समय तक बाबा की पालना में रहूँ, उनकी श्रीमत पर दृढ़ रहूँ, और जब समय आए, तो बिंदी बनकर अपने परमधाम लौट जाऊँ।

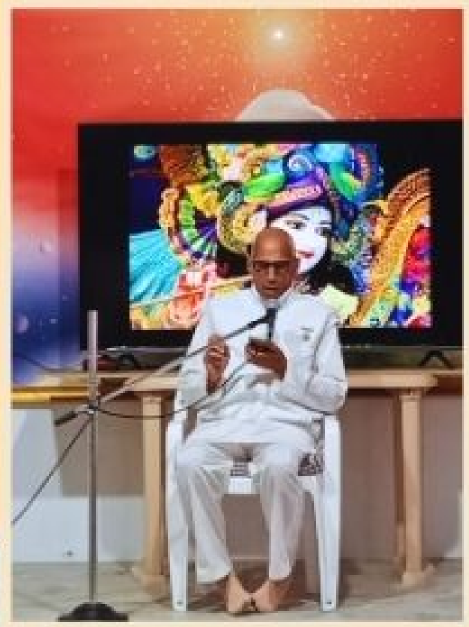

ब्रह्माकुमारीज़

ब्रह्माकुमारीज़

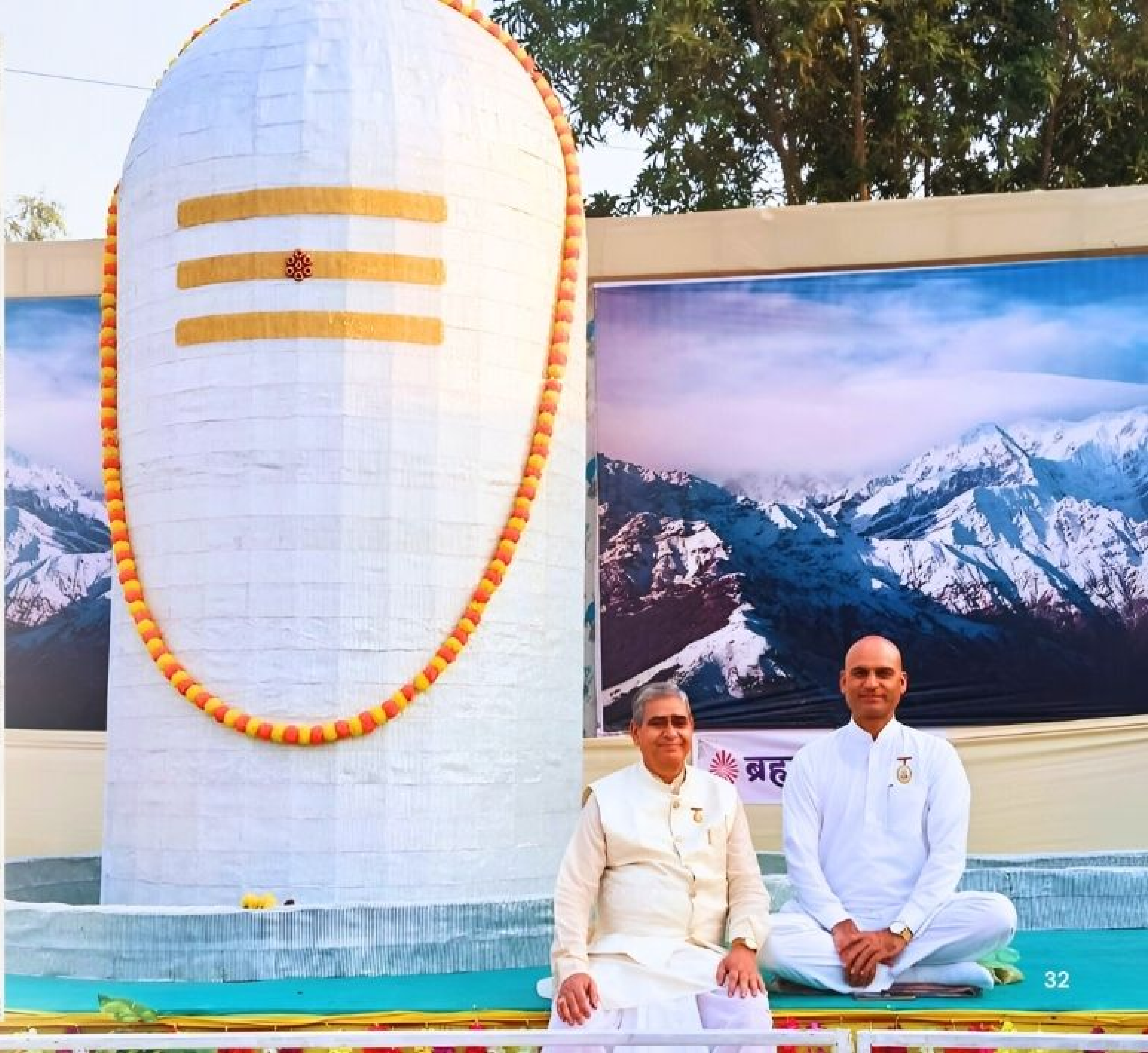

प्रतिभा साव

कोलकाता, उम्र 65

पहले मैं श्यामनगर सेंटर से राजयोग का अभ्यास करती थी, परंतु सेन्टर से मेरा निवास स्थान दूर होने के कारण प्रतिदिन सेंटर जाना संभव नहीं हो पाता था। इस कारण मुरली सुनने का भी अवसर कम ही मिल पाता था। लेकिन अब मैं अहमदाबाद, गुजरात में स्थित खुशराजी वानप्रस्थी आश्रम में रह रही हूँ, जहाँ बाबा की अनुग्रहपूर्ण पालना में मेरा जीवन संपूर्ण रूप से परिवर्तित हो गया है।

खुशराजी में आने के बाद मेरी दिनचर्या में अद्भुत और सकारात्मक परिवर्तन आया है। अब मैं प्रतिदिन अमृतवेला, मुरली, और पूरे दिन के निर्धारित नियमों का पालन सहजता से कर पाती हूँ। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे बाबा ने स्वयं मेरे लिए इस मार्ग का निर्माण किया है। कहते हैं कि कुछ पाने के लिए कुछ छोड़ना पड़ता है – और मैंने अपने लौकिक जीवन के बंधनों को त्यागकर बाबा की अलौकिक गोद में समर्पण का निर्णय लिया। इस निर्णय ने मुझे ब्राह्मण परिवार के स्नेह और अपनापन का अद्भुत अनुभव कराया है। बाबा की पालना में समर्पित होकर, मैं अपने जीवन को परम आनंद और संतोष से भरपूर पाती हूँ। यह मेरा परम सौभाग्य है।

खुशराजी में सभी पर्व और त्योहार अत्यंत धूमधाम से मनाए जाते हैं। वानप्रस्थी भाई-बहन आपस में मिलजुल कर चलते हैं और एक-दूसरे को सहयोग और स्नेह देते हैं। अहमदाबाद, माउंट आबू के निकट होने के कारण देश-विदेश से आने वाले महानुभावों से मुलाकात का सौभाग्य भी हमें मिलता रहता है। यह हम सभी के लिए एक अनमोल आशीर्वाद के समान है। खुशराजी की बड़ी दीदी समय-समय पर सेवा कार्य के लिए मधुबन जाने का भी प्रबंध करती हैं। वहाँ जाने का अनुभव हमारे आत्मिक पुरुषार्थ को और सशक्त बना देता है।

खुशराजी में ईशिता दीदी और वरिष्ठ ललित भाई का प्रबंधन कार्य अत्यंत सुचारू रूप से संचालित हो रहा है। उनकी सुमधुर वाणी, स्नेहपूर्ण दृष्टिकोण और आत्मिक मार्गदर्शन हम सभी वानप्रस्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनकी सेवा भावना और नेतृत्व ने हम सभी को एक अलौकिक परिवार के रूप में जोड़ा है। यहाँ के सेवाधारी भाई-बहन भी अत्यंत निस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं। वे हर आवश्यक स्थिति में तत्परता से सहायता प्रदान करते हैं। उनकी विनम्रता और सेवा का भाव हमें अपनेपन का अहसास कराता है।

खुशराजी का दिव्य वातावरण, सात्विक भोजन, नियमित योग, और मुरली की शिक्षाओं के संग में मेरा जीवन अब संपूर्ण रूप से समृद्ध और प्रसन्न हो गया है। इस अलौकिक अनुभव ने मेरे हृदय को प्रेम और कृतज्ञता से भर दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि बाबा ने मेरे लिए इस पथ का निर्माण विशेष रूप से किया है। यहाँ रहकर मैं इस अनुभव को आत्मसात कर रही हूँ कि मैंने अपने लौकिक परिवार से विदा लेकर बाबा की गोद में अपना सच्चा घर पा लिया है।

मेरा अनुभव यही कहता है कि जो आत्मा अपने स्वपुरुषार्थ को तीव्र करना चाहती है और जीवन को परम आनंद और संतोष से भरना चाहती है, उसके लिए खुशराजी एक स्वर्णिम अवसर है। यहाँ का अनुशासन, सेवा भाव, और दिव्यता जीवन को नई ऊंचाइयों तक ले जाता है। मैं बाबा की इस अनुपम पालना के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ। बाबा ने इस वानप्रस्थ जीवन को खुशियों से भर दिया है।

वाह बाबा, वाह ड्रामा

शोभा अग्रवाल

झारखंड, उम्र 64

लौकिक जीवन में पुरुषार्थ करने में कठिनाई हो रही थी। सेंटर दूर था, इसलिए वहां पहुंचने के लिए ऑटो से जाना पड़ता था। शरीर भी पूरी तरह से साथ नहीं दे रहा था, लेकिन पुरुषार्थ करने की तीव्र लगन मन में थी। एक दिन मैंने बाबा के पास पावरफुल योग लगाया। योग के दौरान मेरी आंखों से अश्रु बह निकले। मुझे ऐसा लगा जैसे बाबा ने मेरे सभी बोझ हल्के कर दिए हों।

थोड़े ही दिनों बाद, बाबा की कृपा से मुझे YouTube के माध्यम से खुशराजी भवन के बारे में पता चला। मन में तुरंत वहां जाने की इच्छा जागी। मैंने अपने बेटे से वहां चलने के लिए कहा। लेकिन बेटे ने कहा कि अगर वहां कुछ भी उल्टा-सीधा दिखा तो वह मुझे वहां जाने से रोक देगा और संस्था से भी दूर कर देगा। यह सुनकर मैंने सोचा कि इस रास्ते से काम नहीं बनेगा।

पहले भी मेरे दामाद ने इच्छा जताई थी कि वे मधुबन देखना चाहते हैं। मुझे यह सुनकर लगा कि बाबा ने मुझे रास्ता दिखाया है। मैंने सही अवसर देखकर दामाद से पूछा कि क्या वे मधुबन चलेंगे। उन्होंने सहर्ष सहमति दी। फिर हमने अरुण भाई से संपर्क करके पूरी जानकारी ली और 2 फरवरी 2023 को सेंटर की ओर से मधुबन की यात्रा पर निकल पड़े।

मधुबन का वातावरण और वहां का दिव्य माहौल मेरे दामाद को बहुत अच्छा लगा। इसके बाद हम अहमदाबाद के खुशराजी भवन पहुंचे। वहां की व्यवस्थित व्यवस्था, ब्रह्मा भोजन और दीदी की सुंदर पालना ने हमारे मन को शांति और स्थिरता दी। मेरे दामाद ने मेरे बेटे से वहां की विशेषताओं के बारे में बात की, जिसके बाद मेरे बेटे ने भी मंजूरी दे दी कि मैं वहां रह सकती हूं।

मैंने वहां एक महीने का ट्रायल लिया। इस दौरान घर की सारी जिम्मेदारियों से मुक्त हो गई। युगल भी राज़ी हो गए। फिर मैं घर वापस गई और वहां दो महीने तक अपनी सारी जिम्मेदारियों को पूरा किया। इसके बाद मैं स्थायी रूप से खुशराजी भवन में रहने के लिए अपने बेटे के साथ आई। यहां का दिव्य वातावरण, ब्रह्मा भोजन और दीदी की स्नेहपूर्ण पालना से मेरा बेटा भी बहुत खुश हुआ। अब जब बेटे से बात करती हूं, तो वह भी "ओम शांति" कहकर उत्तर देता है।

यहां की दिनचर्या पूरी तरह से मधुबन के नियमों के अनुसार चलती है। अमृतबेला से लेकर रात 9:30 बजे तक पूरा कार्यक्रम बड़े अनुशासन और शांति से चलता है।

यहां कोई भी आलस्य या अलबेलापन महसूस नहीं होता। हर महीने लौकिक और अलौकिक जन्मदिन मनाया जाता है। केक काटने और कार्यक्रमों का आयोजन बहुत सुंदर रीति से किया जाता है, जिससे मन आनंदित हो उठता है। बड़े-बड़े त्योहार भी बड़ी श्रद्धा और उमंग के साथ मनाए जाते हैं। दीदी बहुत सुंदर ढंग से इन कार्यक्रमों का संचालन करती हैं, जिससे पूरे भवन में एक विशेष ऊर्जा का संचार होता है।

ललित भाई साहब भी नियमित रूप से आते हैं। उनका स्वभाव अत्यंत विनम्र और सरलचित्त है। उनकी पालना भी बहुत ही सुंदर है, जिससे मन को बहुत शांति मिलती है।

अब मेरा मन बाबा की याद में ही स्थिर हो गया है। बाबा की याद में ही जीना और मरना है। आगे सब कुछ बाबा की इच्छा पर छोड़ दिया है। करन करावनहार बाबा ही हैं। बाबा ने मेरी आत्मा को शांति और सशक्त पुरुषार्थ की शक्ति दी है। अब हर दिन बाबा की छत्रछाया में रहकर पुरुषार्थ करना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है।
ओम शांति।

श्रद्धा शेठ

मुंबई, उम्र 53

पिछले 16 महीनों से खुशराज़ी में रह रही हूँ। बाबा ने कई मुरलियों में कहा है कि "तूफान को तोहफा समझो।" मेरी जिंदगी में भी एक तूफान तोहफा बनकर ही आया। अगर वह तूफान न आया होता, तो शायद मैं कभी ब्रह्माकुमारी में न आती, और न ही मुझे खुशराज़ी का दिव्य सौभाग्य प्राप्त होता।

जब चारों ओर घना अंधकार था, हर ओर निराशा थी, तभी मेरे सेंटर के एक भाई से खुशराज़ी के उद्घाटन की बात सुनी। यह मेरे लिए आशा की एक किरण लेकर आई। हालाँकि मैं खुशराज़ी के नियम और मानदंडों में पूरी तरह से फिट नहीं बैठती थी, फिर भी आदरणीय ललित भाई जी ने मुझे special case के रूप में वहाँ रहने की अनुमति दी। इसके लिए मैं ललित भाई जी की हृदय से आभारी हूँ। यह बाबा का ही वरदान था, जो मुझे इस दिव्य स्थान की ओर खींच लाया।

खुशराज़ी मे आने के बाद जैसे मेरे लौकिक जीवन की सारी उलझनें स्वतः ही सुलझने लगीं। ऐसा लग रहा था जैसे बाबा ने ही मेरे जीवन के सभी कार्यों को तब तक रोके रखा था, जब तक खुशराज़ी तैयार न हो जाए। बाबा जानता था कि मेरे लिए यही स्थान सबसे उपयुक्त है। बाबा ही खुशराज़ी का निर्माण मेरे लिए करवा रहा था, और बाबा ही इसके तैयार होने का इंतज़ार कर रहा था ताकि मुझे यहाँ की पालना में ला सके।

हालाँकि खुशराज़ी के नियम अनुसार यहाँ स्थायी रूप से रहने से पहले एक महीने का ट्रायल आवश्यक होता है, ताकि यहाँ के वातावरण और स्वभाव से परिचित हुआ जा सके। लेकिन मेरे मन में पहले ही स्पष्ट था कि मुझे खुशी-खुशी यहाँ स्थायी रूप से ही रहना है। यहाँ का दिव्य वातावरण, शुद्ध-सात्विक और बाबा को भोग लगाया हुआ आहार, आत्मीय भाई-बहनों का संगठित प्रेम और सेवा का भाव—ये सब मेरे जीवन के सबसे बड़े प्लस पॉइंट हैं।

यहाँ रहने वाले हमजींस भाई-बहनों का संग एक परिवार जैसा ही है। सेवाधारी भाई-बहन सदा मुस्कुराते हुए और सम्मानपूर्वक सेवा करते हैं। प्यार और सद्भाव से पालना देने वाली दीदियों का संग तो जैसे जीवन को स्वर्ग बना देता है। दिनचर्या इतनी व्यवस्थित है कि मन में कोई अस्थिरता या बेचैनी नहीं रहती। सुबह अमृतवेला से लेकर रात के विश्राम तक हर कार्य बाबा के नियम अनुसार ही होता है।

यहाँ जीवन को सहज और आनंदमय बनाने के लिए अनेक सुविधाएँ हैं। लाइब्रेरी में बैठकर ज्ञान की पुस्तकों का अध्ययन करना, भाई-बहनों के साथ संगठित होकर गेम्स खेलना, हर महीने जन्मदिन का उत्सव मनाना और हर त्यौहार को मिल-जुलकर एक परिवार की तरह मनाना—यह सब जैसे मेरे जीवन का स्वर्णिम काल बन गया है। बाबा ने मेरे लिए जो दिव्य संसार तैयार किया है, उसमें हर एक क्षण सुख, शांति और संतोष से भरा हुआ है।

यहाँ के सेवाधारी भाई-बहन और उनकी स्नेहपूर्ण सेवा का श्रेय जाता है आदरणीय ईशिता दीदी और ललित भाई जी को। ईशिता दीदी सिर्फ दीदी ही नहीं, बल्कि हम सबकी ईशिता मां हैं। चाहे कोई वानप्रस्थी हो या सेवाधारी—हर एक के सुख-दुख का ध्यान रखना, उनकी आवश्यकताओं को समझना और हर स्थिति में मुस्कुराते रहना—यह दीदी की विशेषता है। दीदी को देखते ही मन में उमंग और उत्साह भर जाता है। दीदी इस बात का सदैव ध्यान रखती हैं कि हर वानप्रस्थी आत्मा खुश और संतुष्ट रहे। उनकी पालना और मार्गदर्शन से मन में गहरा आत्मविश्वास और स्थिरता का भाव आता है।

तीन महीने पहले एक माता ने खुशराज़ी में अपना शरीर छोड़ा। उस आत्मा की अंतिम यात्रा जिस सम्मान और गरिमा के साथ निकाली गई, उसे देखकर मेरा मन भावुक हो गया। आदरणीय ललित भाई जी और ईशिता दीदी ने जिस स्नेह और मर्यादा के साथ उस आत्मा को विदाई दी, उसे देखकर मैंने मन ही मन निश्चय कर लिया कि मुझे भी इसी दिव्य स्थान से अपने नश्वर शरीर का त्याग करना है। मैंने ईशिता दीदी से कहा—"दीदी, मुझे किसी भी हालत में घर मत भेजना। जहाँ बाबा की पालना में मैं इतने सम्मान और प्यार से जी रही हूँ, वहीं इसी सम्मान और प्यार के साथ शरीर भी त्यागना चाहती हूँ।" अब मेरे मन में एक ही भाव है—"जीना यहाँ, मरना यहाँ, इसके सिवा न जाना कहीं! "शुक्रिया बाबा! शुक्रिया ललित भाई जी और ईशिता दीदी जी! ओम शांति।

अथक सेवाधारी

हरिबल्लभ भाई

मैं हरिबल्लभ भाई, सेक्टर 31, गुड़गांव (हरियाणा) का निवासी हूँ और पिछले 42 वर्षों से ज्ञान के पथ पर अग्रसर हूँ। ज्ञान मार्ग पर चलना मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है। जून 2017 में सेवानिवृत्ति के बाद मैंने शांतिवन में सेवा का शुभारंभ किया। शांतिवन की सेवा ने मुझे आत्मिक संतोष दिया, लेकिन मेरी आत्मा को और भी गहनता से पुरुषार्थ करने की लालसा थी।

अक्टूबर 2023 में मुझे पूजनीय ललित भाई जी ने खुशराजी में सेवा करने के लिए प्रेरित किया। ललित भाई जी के मार्गदर्शन से मैंने और मेरी युगल आत्मा ने खुशराजी में आकर खुशी-खुशी सेवा का दायित्व स्वीकार किया। यहां आकर ऐसा अनुभव हुआ जैसे बाबा ने स्वयं हमें अपनी छत्रछाया में स्थान दिया हो। खुशराजी का शांतिपूर्ण और दिव्य वातावरण आत्मिक उन्नति के लिए अत्यंत अनुकूल है। हमें यहां पुरुषार्थ के लिए समय और संपूर्ण वातावरण की पूर्ण सुविधा मिल रही है, जिससे हमारी आत्मिक उन्नति तीव्र गति से हो रही है।

शांतिवन में बड़े कारोबार के कारण किसी के पास व्यक्तिगत ध्यान देने का समय नहीं होता था। लेकिन खुशराजी में स्थिति बिल्कुल अलग है। यहां आदरणीय ईशिता दीदी प्रत्येक सेवाधारी और वानप्रस्थी की व्यक्तिगत उन्नति पर विशेष ध्यान देती हैं।

दीदी का ममता भरा व्यवहार और उनकी पालना ने हमारे मन को उमंग और उत्साह से भर दिया है। उनकी देखभाल और मार्गदर्शन से हम आंतरिक रूप से धन्य अनुभव कर रहे हैं।

खुशराजी का माहौल अत्यंत खुशनुमा और परिवार जैसा है। यहां के सभी वानप्रस्थी एक समान भाव से एक-दूसरे को स्नेह देते हैं। सेवाधारी वानप्रस्थियों को स्नेह देते हैं और वानप्रस्थी सेवाधारियों को अपनापन देते हैं। इस पारस्परिक प्रेम और सम्मान के वातावरण ने खुशराजी को एक आदर्श परिवार बना दिया है। आदरणीय ललित भाई जी और ईशिता दीदी जी पूरे परिवार को अपने स्नेह से सींचते हैं और हम सबको आत्मिक रूप से सशक्त करते हैं।

खुशराजी में आकर हमारे पुरुषार्थ में भी चार चांद लग गए हैं। बाबा की कृपा और दीदी व भाई साहब की छत्रछाया में हमें पूर्ण सुरक्षा और अपनापन का अनुभव हो रहा है। यहां का अनुशासित और सकारात्मक वातावरण हमारी आत्मा को शांति और स्थिरता प्रदान कर रहा है। इस दिव्य अनुभूति के लिए मैं बाबा, पूजनीय ललित भाई जी और आदरणीय ईशिता दीदी जी का हृदय से धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने हमें यह स्वर्णिम अवसर प्रदान किया है।

मैं स्वयं को धन्य अनुभव करता हूँ कि मुझे इस दिव्य सेवा का अवसर मिला है। बाबा की कृपा और दीदी की पालना ने मेरे जीवन को सार्थकता प्रदान की है। मैं इस सेवा के माध्यम से अपनी आत्मा को ऊंचाइयों तक ले जाने के मार्ग पर आगे बढ़ रहा हूँ। ओम शांति।

बी.के. हिना बहन

मैं बी.के. हिना, गुजरात के जामनगर से हूँ। बाबा के अमृत ज्ञान से जुड़े हुए मुझे 18 वर्ष हो चुके हैं, और पिछले 7 वर्षों से मैं समर्पित सेवाओं में रची-बसी हूँ। बीते 2 वर्षों से खुशराज़ी में सेवाएँ दे रही हूँ, और यह मेरे जीवन का सबसे सुंदर अनुभव रहा है।

जब मैंने पहली बार खुशराज़ी के बारे में सुना, तभी से वहाँ जाने की तीव्र इच्छा थी। लेकिन न तो किसी से जान-पहचान थी और न ही वहाँ तक पहुँचने का कोई साधन। इसके बावजूद, मेरे भीतर यह अडिग संकल्प था कि मैं बाबा की विशेष पालना में इस दिव्य स्थान तक अवश्य पहुँचूँगी। बाबा ने मेरी इस पवित्र भावना को देखा और मानो स्वयं सामने से बुला लिया!

खुशराज़ी मेरे लिए किसी भी प्रकार से मधुबन से कम नहीं है। जब मैं पहली बार यहाँ आई, तो मन में यही अनुभव हुआ कि अब मुझे कहीं और जाने की आवश्यकता नहीं है—यही मेरा सच्चा घर है।

बचपन से ही बुजुर्गों की सेवा करने का विशेष शौक था, और आज ऐसा प्रतीत होता है कि बाबा ने मेरे लिए ही यह खुशराज़ी भवन बनाया है।

यहाँ रहते हुए मैंने अनुभव किया कि जिस प्रेम, पालना और सेवा की तलाश मुझे वर्षों से थी, वह मुझे यहीं पर प्राप्त हुई। बाबा ने जो जिम्मेदारियाँ और सेवा के अवसर दिए हैं, उनसे मैं अत्यंत संतुष्ट और आनंदित हूँ। यह देखकर हृदय प्रसन्न हो उठता है कि निमित्त आत्माएँ हम पर पूर्ण विश्वास रखती हैं—यह मेरे लिए बाबा का अनमोल उपहार है।

खुशराज़ी में आकर सबसे विशेष अनुभव यह रहा कि मुझे ईशिता दीदी मिलीं। वे हर एक आत्मा को अपना समझकर चलती हैं। उनका स्नेह, मार्गदर्शन और व्यवहार अद्भुत है। वे सभी को समान रूप से सम्मान, मान और अपनापन देती हैं और हर एक की शुद्ध भावना को सहजता से स्वीकार करती हैं।

जो प्रेम, सहयोग और दिव्यता मुझे लौकिक जीवन में कहीं नहीं मिली, वह यहाँ भरपूर मात्रा में, बल्कि कहूँ तो अपेक्षा से भी अधिक प्राप्त हुई। बाबा ने जो दिव्य परिवार दिया है, वह मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं।

ललित भाईजी, सभी सेवादारी भाई-बहनें, और वानप्रस्थी आत्माएँ—हर कोई आत्मिक प्रेम और सहयोग से परिपूर्ण हैं। उनके संग रहते हुए मन से अनगिनत दुआएँ निकलती हैं। मैं दिल से बाबा, ईशिता दीदीजी और ललित भाईजी का गहरा आभार व्यक्त करती हूँ कि उन्होंने मुझे वह सब प्रदान किया जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। यह स्थान सिर्फ एक भवन नहीं, बल्कि एक सजीव, दिव्य परिवार है, जहाँ आत्मा का सच्चा उत्थान होता है।

मैं अनुभव करती हूँ कि बाबा की दुआएँ तो सदा मेरे साथ हैं ही, लेकिन यहाँ के परिवार की निरंतर शुभभावनाएँ और सहयोग भी मेरी आत्मा को गहराई से बल और शक्ति देते हैं।

मेरा यही संकल्प है कि—

"सदैव मैं सभी को दुआएँ देती रहूँ और दुआएँ लेती रहूँ, ताकि यह दिव्य यात्रा निरंतर आगे बढ़ती रहे।"

ओम शांति।

Sneha

Divine Experiences of KhushRaazi

KhushRaazi, a sacred abode for the elderly, is not merely a shelter—it is a divine platform radiating boundless grace and selfless service. It stands as a testament to the confluence of care, compassion, and spiritual awakening, where every moment feels like a sacred offering.

My first encounter with KhushRaazi in 2022 was not just a déjà vu—it was a profound spiritual homecoming. The experiences were infused with the unmistakable presence of the Divine, as if God's benevolent hand was guiding every step. The meticulously structured timetable, the simplicity in lifestyle, and the sanctity of its vibrations have not only painted a clearer vision of life but also strengthened the resolve towards a deeper spiritual mission.

This sacred gathering evokes memories of my 14 years of penance in Karachi, each moment of silence now paving the way for new beginnings filled with inner peace and purpose. The unwavering sustenance and the ever-forgiving, magnanimous hearts of Didi and Bhaiji inspire every Sevadhari to walk the extra mile with a determined smile and a heart brimming with gratitude.

The perfect synergy of seva (selfless service), dua (blessings), and meva (divine reward) has infused profound meaning into this life. It feels as though the heart has finally found fulfillment, echoing with the joy of living one's highest purpose.

Perhaps the fruits of past good deeds have ripened into the ultimate blessing of finding this sacred service-place—where each day is cherished and celebrated as the mind rests in the comforting embrace of true solace.

KhushRaazi is not just a place—it's a spiritual sanctuary where the soul finds its rhythm, the heart finds its song, and the spirit soars towards the eternal light.

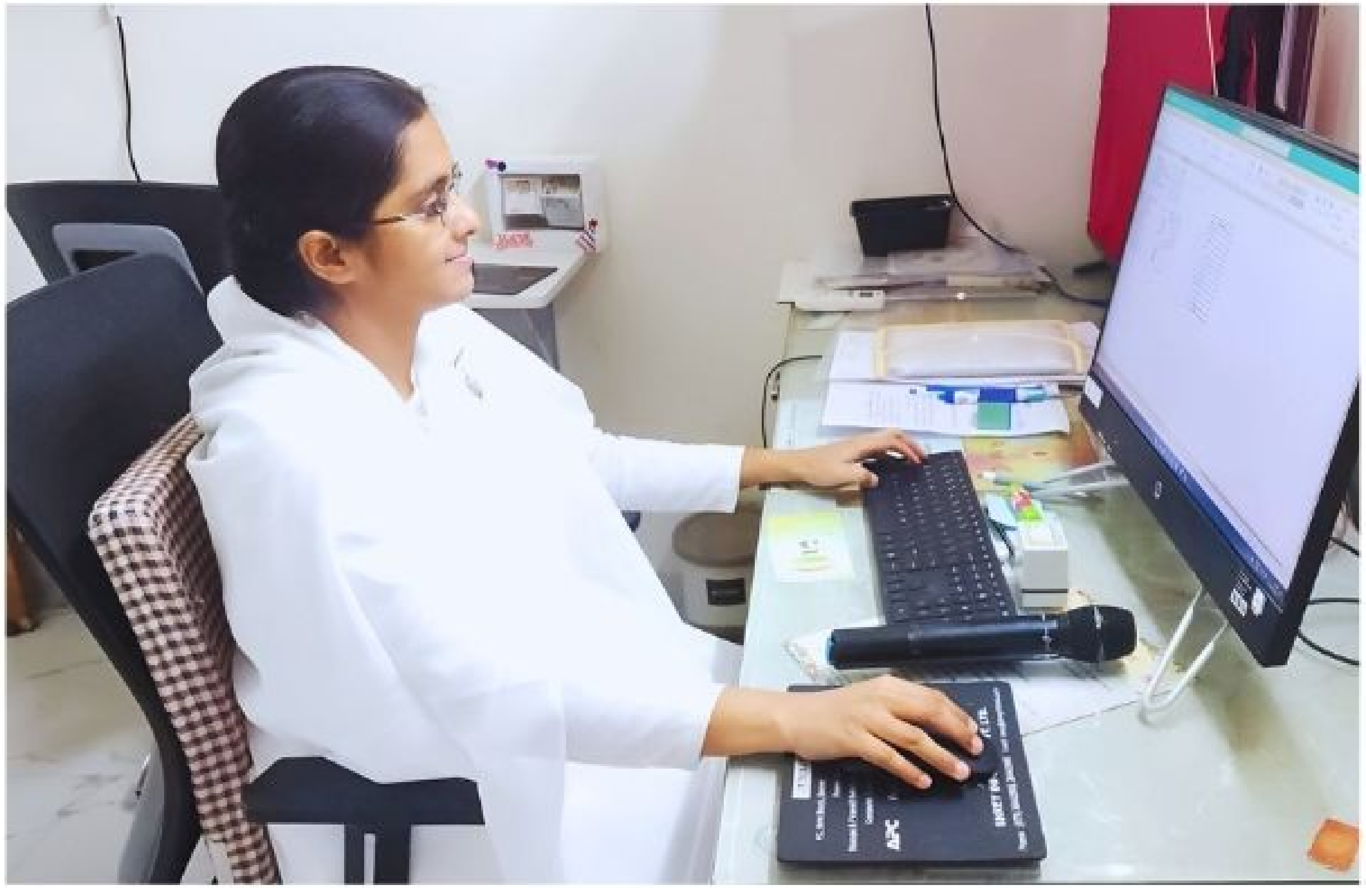

बी.के. आनंद भाई

सन 1999 में जब मुझे यह दिव्य और ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ, तभी मेरे अंतर्मन में एक अद्भुत और अव्यक्त अनुभूति जागृत हुई। इस ज्ञान ने मेरे जीवन का मार्ग प्रशस्त कर दिया और मेरे हृदय में विश्व सेवा की प्रबल उत्कंठा तीव्र गति से प्रज्वलित हो गई। मुझे बार-बार यही अनुभव होता था कि अब मुझे लौकिक सीमाओं से परे, बेहद की सेवा के मार्ग पर आगे बढ़ना है। मेरे मन में यह दृढ़ निश्चय हो गया कि जीवन को यज्ञ सेवा में समर्पित करके ही उसे सार्थक बनाना है। धीरे-धीरे लौकिक कारोबार में मेरी रुचि कम होती गई और मेरा हृदय पूरी तरह से ईश्वरीय सेवाओं में लीन हो गया।

ईश्वरीय सेवाओं के प्रति मेरी निष्ठा और समर्पण को देखते हुए मुझे सेंटर में सेवा का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। यह मेरे जीवन का एक स्वर्णिम अध्याय था। कुछ समय बाद, मधुबन से हमारी आदरणीय दीदी के पास सेवा का आह्वान आया कि यदि कोई सेवाधारी उपलब्ध हो तो उसे मधुबन भेजा जाए। दीदी ने हमारे सेंटर के एक कुमार का नाम आगे बढ़ा दिया, लेकिन मेरी आत्मा की पुकार कुछ और ही थी। मैंने अपने मन की इच्छा किसी से साझा नहीं की, परंतु अंतरमन में निरंतर बाबा से प्रार्थना करता रहा। बाबा मेरी हर भावना को समझते हैं, इसलिए उन्होंने मेरे मन की पुकार सुन ली। उस कुमार ने बिना किसी कारण अपना जाना रद्द कर दिया, और उसी टिकट पर मुझे मधुबन जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह बाबा की कृपा और मेरे संकल्प की शक्ति थी।

मधुबन में मुझे आवास सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ का वातावरण, दिव्यता और शांतिमय ऊर्जा ने मेरे हृदय को संपूर्ण रूप से भर दिया। परंतु तभी मेरे लौकिक जीवन में एक चुनौती आ खड़ी हुई। मेरी माताजी की दोनों आंखों की रोशनी पूरी तरह चली गई थी। डॉक्टर ने मोतियाबिंद बढ़ने की वजह से ऑपरेशन करने से मना कर दिया था। परिवारजन इस स्थिति से निराश हो गए थे, लेकिन मैंने बाबा पर अपना संपूर्ण विश्वास रखा। मैं बाबा से संवाद करता और उनसे यही प्रार्थना करता कि मुझे बंधन मुक्त करें ताकि मैं निश्चिंत होकर विश्व सेवा कर सकूं।

बाबा ने मेरी पुकार सुनी। हमारे गांव में एक शिविर आयोजित हुआ, जहाँ मैंने माताजी को ले जाने का निश्चय किया। शिविर में उपस्थित डॉक्टर ने भरोसा दिया कि ऑपरेशन सफल होगा। बाबा की कृपा से 6 महीने के भीतर माताजी की दोनों आंखों का ऑपरेशन पूर्ण रूप से सफल हुआ। माताजी अब स्पष्ट रूप से देखने लगीं। बाबा ने मेरी चिंता को हर लिया और मुझे बंधन मुक्त कर दिया। इस चमत्कारी अनुभव ने मेरे विश्वास को और अधिक दृढ़ कर दिया।

इसके पश्चात जब सभी सेंटरों में यह संदेश प्रसारित हुआ कि परमानेंट सेवाधारी की आवश्यकता है, तो मेरे हृदय में अपार हर्ष का संचार हुआ। मैं जानता था कि यह बाबा की इच्छा है कि मैं पूर्ण रूप से सेवा में समर्पित हो जाऊं। मेरे हृदय में मधुबन की सेवा का ही आकर्षण था। मैं बार-बार अपने मन में यह गीत गुनगुनाता था:

"दुनिया है यह दलदल और यह दुबन,
मेरा तो प्यारा बाबा और प्यारा मधुबन।"

जब मैंने खुशराजी भवन में प्रवेश किया, तो यहाँ का दिव्य वातावरण देखकर मेरा हृदय गदगद हो उठा। यहाँ की दिनचर्या, व्यवस्था और पालना पूर्ण रूप से मधुबन जैसी ही थी। सबसे विशेष बात यह थी कि हमारी पूजनीय आदरणीय ईशिता दीदी की कोमल, स्नेहभरी और ममतामयी पालना ने मुझे मधुबन जैसा ही अनुभव कराया। दीदी का सहज, प्रेममय व्यवहार और सबको साथ लेकर चलने की कला ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। दीदी का मीठा बोलना, हर्षित मुखमंडल और सहजता से हर समस्या का समाधान करना, यह सब हमारे लिए दिव्य अनुभूति थी।

आदरणीय ललित भाई साहब का शांत, शालीन और धैर्यपूर्ण स्वभाव भी हमारे लिए एक प्रेरणा स्रोत है। भाई साहब कितने भी व्यस्त हों, लेकिन सबकी कुशलक्षेम पूछना और उनकी देखभाल करना कभी नहीं भूलते। यह सेवा भाव और अपनापन हमारे लिए एक दिव्य अनुभव है। यहाँ हमें राजकुमारों की तरह पालना मिलती है। रहने के लिए AC कमरे, भोजन और कपड़े धोने की चिंता से पूर्ण रूप से मुक्त — सबकुछ मधुबन की तरह सुसज्जित और व्यवस्थित। यह सचमुच मधुबन के ही स्वरूप का अनुभव कराता है।
यह सब बाबा की ही कृपा है कि हमें इस महान सेवा का अवसर मिला है। इस दिव्य सेवा के लिए मैं आदरणीय ईशिता दीदी और ललित भाई साहब का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी पालना ने हमें जन्म-जन्मांतर के भाग्य बनाने का स्वर्णिम अवसर दिया है। बाबा की छत्रछाया में रहते हुए हमें यह आभास होता है कि हम वास्तव में मधुबन के ही कक्ष में निवास कर रहे हैं। यहाँ की दिव्य अनुभूति और सेवा ने मेरे जीवन को सार्थक बना दिया है। बाबा की असीम कृपा और सेवा की शक्ति से मेरा जीवन कृतार्थ हो गया है।

बी.के. कबिराज भाई

मैं कबिराज भाई, प्राण-प्यारे अव्यक्त बापदादा की संतान, बापदादा की दिलतख्तनशीन आत्मा हूँ। बाबा ने मुझे अपनी असीम पालना में बिठाया है, और जो अनुभव व उपहार उन्होंने मुझे दिए हैं, उन्हें शब्दों में व्यक्त कर पाना मेरे लिए संभव नहीं है।

जब मैं एक छोटा कुमार था, तभी मेरे मन में यज्ञ की सेवा करने का संकल्प जागा, और मैं अपने घर से निकल पड़ा। उस समय मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि बाबा स्वयं मुझे अपनाएँगे, और मुझे अपना साकार सिकिलधा बच्चा बनाकर सेवाएँ लेंगे। लेकिन बाबा की रहमत और उनकी अलौकिक दृष्टि ने वह सब संभव कर दिया, जो मेरी सोच से कहीं परे था।

मैंने मधुबन में लगभग 18 वर्षों तक विभिन्न विभागों में सेवा की। यह सेवा मेरे लिए सौभाग्य का विषय थी, और बाबा की कृपा से इस दौरान मैंने अनमोल अनुभवों को संचित किया। बाबा ने मेरी सेवा से प्रसन्न होकर मुझे एक ऐसा दिव्य उपहार दिया, जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी—खुशराज़ी में सेवा करने का अद्वितीय अवसर! जैसे ही मैं खुशराज़ी पहुँचा, वहाँ का दिव्य वातावरण और दीदियों की ममता भरी पालना ने मेरे हृदय को गहराई से छू लिया। विशेष रूप से, दीदियों द्वारा मिला स्नेह, मार्गदर्शन और सहयोग मेरी आत्मा के लिए एक संजीवनी के समान था। बाबा ने दीदियों को निमित्त बनाकर मेरी समर्पण की तमन्ना को पूर्ण कर दिया। यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशी थी, जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है।

बाबा ने जो कुछ भी दिया है, उसकी कोई गिनती नहीं हो सकती—बस यही भाव मन में उमड़ता है:

"बाबा! आपके असीम प्रेम और कृपा के आगे मैं कृतज्ञता से नतमस्तक हूँ।"

Thanks BapDada!

पद्मा गुणा शुक्रिया, मेरा बाबा!

डॉ. मोनिका बहन

खुशराजी भवन की स्थापना के साथ ही Physiotherapy Department की शुरुआत की गई थी, जिसका संचालन करने का निमित्त हमें बाबा ने बनाया है। यह विभाग बाबा के घर में अत्याधुनिक मशीनों से सुसज्जित है, जहां Ortho, Musculoskeletal, Neuro, Cardio या अन्य किसी भी विषय से संबंधित फिजियोथैरेपी सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

फिजियोथैरेपी डिपार्टमेंट इतना विशाल और सुव्यवस्थित है कि यहां पर हम Gait Training और Balance Exercise के साथ-साथ बाबा के सॉन्ग्स पर Group/Creative Exercise भी करा रहे हैं। हमारा यह अनुभव है कि रोज़ अमृतवेले बाबा हमें अपनी सर्वशक्तियों और वरदानों से भरपूर कर देते हैं। लेकिन वानप्रस्थी भाई-बहनें जल्दी से स्वस्थ हो जाएं, इसके लिए बाबा हमें विशेष Healing Power प्रदान करते हैं। इस सेवा के माध्यम से हम सभी की दुआओं के पात्र बनते हैं।

यह हमारा व्यक्तिगत अनुभव है कि जब भी हम किसी को ट्रीटमेंट देते हैं, तब बाबा की स्मृति के साथ "मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूं" और "विजयी आत्मा हूं" — इस स्वमान स्मृति में स्थित रहते हैं। इसी Healing Power के माध्यम से सभी ठीक होते हैं। हम तो केवल निमित्त मात्र हैं। Clinic के भीतर एक अलौकिक वातावरण का अनुभव सभी को होता है, जिसमें शांति और शक्ति समाई रहती है। ऐसे वानप्रस्थी भाई-बहनें, जिन्होंने अपने बेटे या बेटी को बाबा की सेवा में समर्पित किया है या जो पिछले 30-40 वर्षों से बाबा की श्रीमत पर एक्यूरेट चल रहे हैं—उनकी निस्वार्थ सेवा करने का सौभाग्य हमें मिला है। इससे हमें पदमगुणा दुआएं और सेवा का भाग्य प्राप्त हुआ है। इसके लिए दिल से बाबा का शुक्रिया, बाबा का शुक्रिया।

बी.के. मनोज भाई

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे खुशराज़ी में वृद्धजनों की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ।
यज्ञ का यह दूसरा वृद्धाश्रम है, जो सीधा मधुबन से कनेक्टेड है और जिसे एक बहुत ही सुंदर नाम मिला है—खुशराज़ी। यहाँ के Management team के सदस्य—आदरणीय ललित भाईसाहब, ईशिता बहन जी और कृष्णा भाई जी—ने इस स्थान को stand करने के लिए दिन-रात 20-20 घंटे सेवाएँ दीं। उन्होंने ना दिन देखा, ना रात... उनकी अथक मेहनत और समर्पण के कारण ही आज यहाँ रहने वाले अनेकों वृद्धजनों के चेहरे खुशी से खिले हुए हैं।

लौकिक जीवन में एक ही वृद्ध माता-पिता की देखभाल करना कठिन हो जाता है, लेकिन ललित भाई साहब ने यज्ञ के Accounts जैसे बड़े और जिम्मेदार क्षेत्र की सेवाओं के साथ-साथ, अनेकों वृद्धजनों को सुखी रखने का बीड़ा उठाया—यह अतुलनीय है।

इस शुभ कार्य को सफल बनाने में अहमदाबाद की ईशिता बहन जी ने जो हिम्मत, दूरदर्शिता और सेवा भावना दिखाई, वह भी अद्वितीय है।
वास्तव में, खुशराज़ी प्यारे बापदादा द्वारा वानप्रस्थी आत्माओं के लिए लगाई गई एक लॉटरी है। अब देखना यह है कि पूरे संसार में से कौन-कौन इस लॉटरी को जीत पाता है।
एकांत में बना यह बाबा का घर, बाबा के बुजुर्ग बच्चों के लिए तपस्या का एक अत्यंत सुंदर स्थान है। इस पवित्र भूमि पर कोई भी बुजुर्ग आत्मा केवल 2 महीने की तपस्या करके, 20 साल के युवाओं को भी पीछे छोड़ सकती है।

एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि बुजुर्गों को इस उम्र में सबसे अधिक चिंता होती है—"हमें अब कौन संभालेगा?" यह चिंता यहाँ आके चैन में बदल जाती है, क्योंकि यहाँ के सेवाधारी भाई-बहनें उन्हें अपने माता-पिता के समान प्यार और देखभाल देते हैं।

खुशराज़ी अहमदाबाद और मधुबन भूमि के बहुत नज़दीक है। कोई भी बुजुर्ग यहाँ से मधुबन के लिए आराम से गाड़ी बुक करके केवल 3-4 घंटे में पहुँच सकता है और वहाँ की योग भट्टी या अन्य किसी भी प्रोग्राम में भाग ले सकता है।

कुल मिलाकर, जो भी वृद्ध आत्मा यहाँ रह रही है या भविष्य में आने वाली है, उनके दिल से यही गीत अवश्य निकलेगा— "वाह मेरे बाबा, वाह! वाह मेरा भाग्य, वाह!"

बी.के. संभव जैन

मैं इस समय कक्षा 11वीं का छात्र हूं। मैं सत्वा इंटरनेशनल स्कूल में पढ़ रहा हूं। मेरा लौकिक घर उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में है। मेरे मम्मी, पापा, बहन, मामा और मैं सभी पिछले 10 वर्षों से ज्ञान मार्ग पर चल रहे हैं। मैं खुद को बेहद सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे खुशराजी में रहने का अवसर मिला है।

मुझे वृद्ध लोगों से विशेष लगाव है। मेरे लौकिक मामा धीरेज भाई ने मुझे छुट्टियों में घूमने के लिए खुशराजी भेजा था। जब मैं खुशराजी आया, तो मुझे दीदी की माँ जैसी पालना मिली और बड़ों और वानप्रस्थियों का जो स्नेह और अपनापन मिला, उसने मेरे दिल को इस कदर भर दिया कि मैं वापस घर जाने का मन ही नहीं बना पाया। मैंने अपने माता-पिता से अनुमति लेकर मामा के साथ जाकर खुशराजी के पास स्थित सत्वा स्कूल में दाखिला ले लिया।

मुझे बाबा के घर में सेवा करने से अत्यंत खुशी और संतुष्टि मिलती है। यह मेरा परम सौभाग्य है कि मैं बाबा के घर में रहकर पढ़ाई कर रहा हूं। खुशराजी का अनुशासित वातावरण मेरी छात्र जीवन की यात्रा को सरल और व्यवस्थित बना रहा है। यहाँ का खुशनुमा माहौल पढ़ाई के कारण होने वाले छोटे-मोटे तनाव को तुरंत समाप्त कर देता है। मेडिटेशन के कारण मेरा मन पहले से कहीं अधिक स्थिर और केंद्रित हो गया है। बड़ों के मार्गदर्शन और सहयोग से मेरी पढ़ाई में भी उल्लेखनीय सुधार देखने को मिल रहा है।

लौकिक शिक्षा के साथ-साथ मैं खुशराजी में अलौकिक उच्च शिक्षा भी प्राप्त कर रहा हूं। दीदी मेरे खान-पान, पढ़ाई, सेवा, कोचिंग और मधुबन ले जाने जैसी सभी चीजों का विशेष ध्यान रखती हैं। मेरे मम्मी-पापा भी मेरे खुशराजी में रहने से अत्यंत खुश और संतुष्ट हैं। मुझे इस बात की खुशी है कि मेरा पूरा परिवार बाबा की गोद में पल रहा है।

इस बाबा मिलन के अवसर पर जब दीदी मुझे मधुबन ले गईं, तो वह अनुभव अविस्मरणीय रहा। मधुबन जाने की मेरी बहुत इच्छा थी, जो इस मिलन के माध्यम से पूरी हुई। दीदी के साथ बाबा मिलन में जाने पर मुझे अनेक सुनहरे अवसर मिले। बाबा से मिलन का सौभाग्य प्राप्त हुआ और खूब टोली भी खाई। मैंने वहाँ सभी के चेहरों पर संतुष्टि और आनंद की चमक देखी और स्वयं भी आत्मिक संतुष्टि का अनुभव किया।

मैं स्वयं को अत्यंत भाग्यशाली मानता हूं कि बाबा मुझसे इतना प्यार करते हैं, जिन्होंने मुझे इतना सुंदर परिवार और दिव्य वातावरण प्रदान किया है। मैं हृदय से ईशिता दीदी और ललित भाईजी का आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने मुझे अपनी छत्रछाया में इस तरह से पालना दी है।

शुक्रिया बाबा, शुक्रिया दीदीजी और सभी वानप्रस्थी फरिश्तों का

बी.के. हरीश चंद्र

मुझे बाबा के दिव्य ज्ञान से परिचय खुशराजी भवन से ही हुआ है। यह मेरा परम सौभाग्य है कि मैंने ज्ञान का अमृत इसी पवित्र धरा पर प्राप्त किया। मैं स्वयं को अत्यंत भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे इस महान यज्ञ का हिस्सा बनने का अवसर मिला।

मुझे ज्ञान मार्ग पर चलाने का श्रेय मेरी निमित्त बहन, राजयोगिनी, आदर्श शिक्षिका, बीके ईशिता बहन को जाता है। ईशिता बहन ने मुझे 7 दिवसीय राजयोग कोर्स कराया, जिसने मेरे जीवन को एक नई दिशा दी। दीदी का व्यक्तित्व अद्भुत विशेषताओं से परिपूर्ण है। उनकी मातृवत् पालना, दिव्य दृष्टि, दूरदर्शिता और सहजता ने मेरे हृदय को पूरी तरह से जीत लिया। उनकी वात्सल्य भरी पालना और मार्गदर्शन ने मेरे जीवन को एक नई रोशनी से भर दिया है।

ज्ञान प्राप्त किए मुझे लगभग ढाई वर्ष हो चुके हैं। इस दौरान मैंने दो बार मधुबन में बाबा मिलन का दिव्य अनुभव किया है। मधुबन के शक्तिशाली वाइब्रेशन और दिव्यता का जो अनुभव मैंने वहां किया था, वही अनुभूति मुझे खुशराजी भवन में भी होती है। वास्तव में खुशराजी भवन बाबा के द्वारा रचित एक दिव्य स्थान है, जहां खुशी, संतोष और शांति की अविरल धारा प्रवाहित होती है। इस ढाई वर्ष की अवधि में मैंने इस भवन मे साक्षात् खुशी और संतोष (खुश और राजी) का संगम अनुभव किया है। इस समय मैं रात्रि सेवा (सिक्योरिटी सेवा) का निमित्त सेवाधारी हूँ।

रात की सेवा के दौरान मुझे ऐसा आभास होता है कि स्वयं महाज्योति स्वरूप, निराकार परमपिता परमात्मा इस भवन को प्रकाश की लालिमा से जगमगा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो दिव्य ज्योति की किरणें पूरे खुशराजी भवन को एक ऊर्जा-क्षेत्र में परिवर्तित कर रही हैं। इस दिव्य अनुभूति से मेरा मन और आत्मा पूर्णतः आनंद और संतोष से भर जाती है।

खुशराजी भवन वास्तव में एक तपस्या धाम है। जैसे साकार बाबा ने संगम युग के आरंभ में 14 वर्षों की भट्ठी से अमूल्य रत्न तैयार किए थे, जिन्होंने पूरे विश्व को ज्ञान और प्रकाश की किरणों से सजाया, ठीक वैसे ही खुशराजी भवन भी एक दिव्य तपस्या स्थली बन रहा है। इसका उद्घाटन 5 अक्टूबर 2022 को हुआ था, और मुझे पूर्ण विश्वास है कि बाबा की इस तपस्या स्थली के 14 वर्ष पूरे होते-होते यानी 2036 तक, यह भवन विश्व को ज्ञान और शक्ति से प्रकाशित करेगा। यह भवन बाबा के संगमयुग के 100 वर्षों का स्वर्णिम प्रतीक बनेगा।

खुशराजी में हमें आदरणीय परम प्रिय भ्राता बीके ललित भाई जी की पालना भी पिता के समान मिल रही है। ललित भाई जी का स्नेह, मार्गदर्शन और आत्मीयता हम सभी के लिए एक संजीवनी के समान है।

उनके सहज और ममतामयी स्वभाव ने पूरे परिवार को एकता के सूत्र में बांध दिया है। उनकी पालना से हर सेवाधारी और वानप्रस्थी स्वयं को सुरक्षित, सुखी और संतुष्ट अनुभव करते हैं।

ईशिता दीदी के साथ-साथ बीके दीप्ति बहन, कृति बहन और हिना बहन का प्रेम और स्नेह भी सेवाधारियों और वानप्रस्थियों के प्रति अद्‌भुत है। उनकी मधुर वाणी, प्रेममयी दृष्टि और आत्मीय व्यवहार ने इस भवन के वातावरण को एक दिव्य ऊर्जामंडल में परिवर्तित कर दिया है। उनके सान्निध्य में सेवाधारी और वानप्रस्थी आत्माएं स्वयं को संपूर्ण रूप से धन्य अनुभव करती हैं।

मैं हृदय से बाबा, ईशिता दीदी, ललित भाई जी और समस्त सेवाधारी भाई-बहनों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मुझे इस दिव्य भवन की सेवा का अवसर दिया।

बी.के. महेंद्र कुमार

मैं 2015 से ज्ञान में चल रहा हूँ। मेरे राजयोग के अनुभव की शुरुआत भी अद्‌भुत रही है।
बचपन से ही मैंने भक्ति और साधना का वातावरण देखा था। लेकिन एक दिन टेलीविजन पर ब्रह्माकुमारी गुलज़ार दादी जी का कार्यक्रम देखा, जिसमें "जब बाबा आता है" गीत बज रहा था। उस गीत ने मेरे मन को भीतर तक छू लिया। उसी पल मुझे बाबा का दिव्य ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा मिली। मैंने तुरंत 7 दिन का कोर्स किया और तब से लेकर आज तक बाबा की शक्तियों और अनुभवों से मेरा जीवन भरपूर हो गया है। इस दिव्य मार्ग पर अनेक स्थानों पर सेवा करने का सौभाग्य मिला है। लेकिन जब मुझे खुशराजी में सेवा के लिए भाई साहब ने भेजा, तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे स्वयं बाबा ने मुझे यहां बुलाया हो।

जब मैंने सेवा शुरू की, तो बाबा वरदान और खुशराजी के सेवाधारी भाई-बहनों और बड़ी दीदी जी का अपार स्नेह और सम्मान पाकर मेरा मन स्थिर हो गया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो बाबा कह रहे हों —"बच्चे, यही तुम्हारा स्थान है। यहीं रुक जाओ।" मैंने बिना कोई संकोच किए दीदी जी से "हाँ जी" कह दिया। बाबा की दुआओं और दीदी जी के वात्सल्य ने मुझे यहां रोक लिया।
खुशराजी में सेवा करना सौभाग्य की बात है। यह वह स्थान है, जहाँ बाबा की श्रीमत का पूर्ण पालन हो रहा है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे मैं बेहद की फूलों की बगिया में एक छोटी-सी कली के रूप में हूँ, जिसे बाबा ने बड़े प्रेम से संजोया है। बाबा की छत्रछाया मे और बड़ी दीदी जी के आशीर्वाद से मैं प्रतिदिन शक्ति और उमंग-उत्साह से भर जाता हूँ।

यहाँ का वातावरण शांत, मधुर और शक्तिशाली है। बाबा की दिव्य उपस्थिति का अनुभव हर क्षण होता है। यहाँ की दिनचर्या, अनुशासन और सेवा का भाव — सब कुछ श्रीमत के अनुसार है। बाबा की पालना और दीदी जी की छत्रछाया में मेरा जीवन संपूर्ण हो गया है।

खुशराजी एक ऐसा दिव्य धाम है, जहाँ आत्मा को शांति, प्रेम और शक्ति का अनुभव सहज रूप से होता है। जो भी यहां आता है, उसकी आत्मा में एक नया प्रकाश जागृत हो जाता है।

मैं हृदय से बाबा, बड़ी दीदी और बड़े भाई साहब का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मुझे इस अद्‌भुत सेवा का हिस्सा बनाया। बाबा की कृपा से मैं आगे भी अपनी सेवा को पूरी निष्ठा, प्रेम और समर्पण के साथ निभाता रहूँगा। जो भी आत्मा शांति और शक्ति की अनुभूति करना चाहती है, उसे एक बार खुशराजी आकर इस दिव्यता का अनुभव अवश्य करना चाहिए।

बी.के.मीना माता

मैं 14 जुलाई 2003 से बाबा से जुड़ी हूँ—वह शुभ दिन था, जब बाबा ने मुझे अपनाया और मेरे जीवन को एक नई दिशा दी। तब से लेकर आज तक, बाबा की असीम पालना और अटूट प्रेम में मैं निरंतर आगे बढ़ रही हूँ।

साल 2024 में मैं मधुबन में सेवाएँ दे रही थी। वहाँ की दिव्यता और सेवा अनुभव अद्भुत था। जब मेरा 6 माह का सेवा काल पूर्ण हुआ, तो वहाँ के नियम अनुसार, मुझे कुछ समय के लिए लौकिक घर लौटना पड़ा। मैंने बहुत प्रयास किया, लेकिन लौकिक घर में मन टिक नहीं पाया। उसी दौरान संजय भैया ने सुझाव दिया कि मैं एक महीने के लिए खुशराज़ी आ जाऊँ, और फिर पुनः मधुबन लौटकर सेवा करूँ। मैंने सहज भाव से स्वीकार कर लिया और सोचा—चलो, एक महीने के लिए खुशराज़ी चलते हैं।लेकिन जैसे ही मैं खुशराज़ी पहुँची, यहाँ के दिव्य वातावरण, प्रेमपूर्ण सेवाओं और परिवार जैसे भाई-बहनों के स्नेह ने मेरे हृदय को छू लिया।

यहाँ की सेवाधारी आत्माओं, भाई-बहनों की आत्मीयता, और दीदियों की निश्छल पालना ने मुझे ऐसा अनुभव कराया, मानो मैं सदा से यहीं की हूँ। विशेष रूप से ईशिता दीदी, दीप्ति दीदी, हिना दीदी और अन्य सभी दीदियों का असीम स्नेह और आत्मीयता माता-पिता के समान अनुभव होता है।वे इतनी सुंदर रीति से हमारी पालना करती हैं कि कभी किसी भी चीज़ की कमी नहीं महसूस होती। उनकी यह भावना कि - अगर आपको किसी भी समय - चाहे रात हो या दिन—कोई भी परेशानी हो, तो हमें अवश्य बताइए, "हमें पूर्ण सुरक्षा और अपनापन का एहसास कराती है।

इसी प्रकार, बड़े भाई साहब, ललित भाई, और सभी सेवाधारी भाई-बहनों से मिलने वाला रूहानी प्रेम और अपनापन अवर्णनीय है।

एक गीत की पंक्तियाँ याद आती हैं—"यहाँ जो भी आता है, वही का हो जाता है..."यही मेरा भी अनुभव रहा। जब मैं यहाँ आई थी, तो सोचा था कि बस एक महीने के लिए रहूँगी, लेकिन अब यह स्थान मेरे हृदय का स्थायी निवास बन गया है। बाबा के इस दिव्य धाम में मुझे वह अलौकिक सुख, प्रेम और शांति प्राप्त हुई, जिसकी मेरी आत्मा को सदा से तलाश थी।

ब मेरा यही संकल्प है कि मैं बाबा की श्रीमत का पालन करते हुए, इस पावन स्थान पर रहकर अपने फरिश्ता जीवन को और अधिक दिव्य बनाऊँ, और अंततः बिंदी बनकर परमधाम लौट जाऊँ।

HAPPY BIRTHDAY

बी.के. पद्मा बहन

हैदराबाद, तेलंगाना

स शरीर का नाम बी.के. पद्मा है। मैं तेलंगाना, हैदराबाद के शांति सरोवर से कुलदीप दीदी के कनेक्शन से जुड़ी हूँ और वर्तमान में Godavarikhani सेंटर में बाबा की सेवा कर रही हूँ।

मेरा बाबा के साथ यह दिव्य संबंध बचपन से ही जुड़ा हुआ है। जब मैं सिर्फ 5 वर्ष की थी, तभी मेरे माता-पिता को बाबा का दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ। उस समय से ही मैं भी उनके साथ बाबा के घर जाने लगी थी। घर का वातावरण अलौकिक और शुद्ध था, जिससे बचपन से ही मेरे मन और आत्मा में आध्यात्मिक बीज अंकुरित हो गए थे। 1981 से मैं इस दिव्य यात्रा पर चल रही हूँ और 1990 से बाबा के घर की सेवाओं से जुड़ी हूँ। बाबा की कृपा से यह आत्मा निरंतर सेवा के पथ पर आगे बढ़ रही है।

मेरे लौकिक माता-पिता पिछले दो वर्षों से खुशराजी वृद्धाश्रम, अहमदाबाद में रह रहे हैं। इससे पहले, जब वे लौकिक घर में थे, तो बढ़ती उम्र के कारण उन्हें कई स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता था।

घर पर उनकी देखभाल के लिए कोई स्थायी रूप से मौजूद नहीं था। अकेलापन और अस्वस्थता के कारण वे मानसिक रूप से भी परेशान रहते थे। जब भी उनकी तबीयत खराब होती थी, तो मुझे तुरंत घर जाना पड़ता था। ऐसे में मुझे लगभग 10-12 दिन घर पर रहकर उनकी देखभाल करनी पड़ती थी। इस स्थिति ने मुझे भी मानसिक और शारीरिक रूप से बहुत प्रभावित किया था।

मैं बाबा से सदा यही प्रार्थना करती थी कि बाबा, हमारे लिए कोई समाधान दो। शायद बाबा ने मेरी पुकार सुन ली। एक दिन, टेलीग्राम ग्रुप में सी.ए. ललित भाई जी ने खुशराजी के बारे में कुछ जानकारी साझा की। जैसे ही मैंने इसके बारे में सुना, मुझे लगा कि बाबा ने हमारे लिए स्वयं रास्ता खोल दिया है। मैंने तुरंत अपने माता-पिता को इस बारे में बताया। वे यह सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए। मुझे लगा कि बाबा ने सही समय पर सहायता भेजी है।

अब उन्हें खुशराजी में रहते हुए दो वर्ष हो चुके हैं। उनके वहां जाने के बाद मेरी चिंता और तनाव समाप्त हो गए हैं। अब उनके चेहरे पर शांति और संतोष के भाव स्पष्ट दिखाई देते हैं।

पहले घर की स्थिति देखकर मेरा मन भारी हो जाता था, लेकिन जब से वे खुशराजी गए हैं, मुझे पूर्ण आत्मिक शांति मिली है। अब चाहे उनकी तबीयत कैसी भी हो, उनके चेहरे पर हर समय खुशी और उत्साह बना रहता है।

जब वे मुझे फोन करते हैं, तो वे बड़े ही प्रसन्न भाव से कहते हैं —"दीदी का प्यार, यहां की दिनचर्या और तीव्र पुरुषार्थ ने हमें इतना व्यस्त कर दिया है कि व्यर्थ के लिए समय ही नहीं बचता। दीदी हमारी हर जरूरत का पूरा ख्याल रखती हैं और हर तरह से हमारी मदद करती हैं। यहां के सेवाधारी भी अत्यंत सेवाभावी और समर्पित हैं। हमें किसी भी बात की कमी महसूस नहीं होती।"

मेरी मां के लिए दीदी जी वास्तव में मां के समान हैं। उनका वात्सल्य, देखभाल और आत्मीय प्रेम हमें अंदर तक अनुभूत होता है। दीदी जी की पालना और मार्गदर्शन ने मेरे माता-पिता के जीवन को न केवल सरल, बल्कि पूर्ण रूप से आनंदमय बना दिया है। वे दीदी जी के प्रति हृदय से कृतज्ञ हैं।

मेरे माता-पिता की इस दिव्य परिवर्तन के लिए मैं ललित भाई जी की अत्यंत आभारी हूँ। उनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन से ही मेरे माता-पिता को यह दिव्य आश्रय मिला है। मैं ईशिता दीदी जी की भी हृदय से आभारी हूँ, जिनकी ममता और देखभाल ने मेरे माता-पिता के जीवन को शांति और संतुष्टि से भर दिया है। मैं खुशराजी के सभी सेवाधारी भाई-बहनों की भी हृदय से आभारी हूँ, जो सेवा और समर्पण की भावना से इस यज्ञ को सुचारु रूप से चला रहे हैं। बाबा के इस दिव्य परिवार का हिस्सा बनकर मैं स्वयं को अत्यंत भाग्यशाली और धन्य अनुभव कर रही हूँ। मुझे अपना अनुभव साझा करने का अवसर देने के लिए मैं बाबा, दीदी जी और ललित भाई जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। बाबा की कृपा से यह आत्मा सदैव सेवा के पथ पर आगे बढ़ती रहे — यही मेरी सच्ची प्रार्थना है। ओम शांति...

बी.के. राधा बहन

किंगडम ऑफ बहरीन

सभी खुशराजी परिवार के भाई-बहनों और हमारी प्यारी दीदियों को कोटि-कोटि धन्यवाद और हृदय से ॐ शांति।

खुशराजी परिवार का हिस्सा बनकर जो अनुभूति मिली है, उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। मेरे जीवन का सबसे सर्वश्रेष्ठ निर्णय यही था कि मैं ब्रह्माकुमारी बनी और दूसरा सबसे महत्वपूर्ण निर्णय यह था कि मैंने अपनी मां को खुशराजी परिवार में रखने का संकल्प लिया।

मां के लिए बाबा की गोद का वरदान

मां को मैंने पहली बार 25 अक्टूबर 2023 को खुशराजी में एक महीने के ट्रायल के लिए लाया था। उस समय मन में कई शंकाएँ और जिज्ञासाएँ थीं कि माँ वहाँ सहज हो पाएंगी या नहीं। लेकिन जैसे ही खुशराजी के शांत, दिव्य और रूहानी वातावरण में प्रवेश किया, आत्मा को एक अद्‌भुत शांति और अपनापन का अनुभव हुआ।

खुशराजी में प्रवेश करने के साथ ही वहाँ की व्यवस्थाएं, वहाँ का शुद्ध वातावरण, और सबसे महत्वपूर्ण वहाँ की सेवाधारी दीदियों और भाई-बहनों का प्यार और सम्मान देखकर मन पूरी तरह निश्चिंत हो गया।

खासकर ईशिता दीदी का आत्मीय स्वभाव और मां के प्रति उनका वात्सल्यपूर्ण व्यवहार देखकर मैंने तुरंत निर्णय लिया कि अब मां को यहीं रखना है।

मां के लिए घर पर अकेले रहना बहुत कठिन हो गया था। मेरी बड़ी बहन नौकरी करती थी और मैं खुद विदेश में सेवा में थी। सेंटर भी घर से दूर था और मां की तबियत ऐसी नहीं थी कि वह नियमित रूप से सेंटर जा सकें। मां अक्सर अपने कमरे से बाहर भी नहीं निकलती थीं। वह अकेलेपन और नीरसता में जी रही थीं।

हम चार बहनें मिलकर एक ऐसा स्थान तलाश रही थीं जहाँ माँ को बाबा का वातावरण मिले, उन्हें एक सुरक्षित और सुखद वातावरण प्राप्त हो, और जहां वह बाबा की पालना में अपना शेष जीवन आत्मिक शांति के साथ बिता सकें।

जब हमें पता चला कि बाबा के घर में ही खुशराजी भवन के रूप में एक वरदानस्वरूप स्थान है, तो हमें लगा कि बाबा ने ही हमारी प्रार्थना सुन ली। और सचमुच बाबा ने हमारी झोली में वह दिया जिसकी हमें सबसे ज्यादा आवश्यकता थी।

खुशराजी का दिव्य वातावरण और सेवा का सागर

जब माँ ने खुशराजी में रहना शुरू किया, तो शुरुआती दिनों में थोड़ा एडजस्ट करने में कठिनाई हुई। आखिर घर का आरामदायक और स्वतंत्र वातावरण छोड़कर एक अनुशासनबद्ध और संयमित आध्यात्मिक दिनचर्या अपनाना आसान नहीं होता। लेकिन धीरे-धीरे माँ को वहाँ की मर्यादाएं और दिनचर्या इतनी सहज और सुंदर लगने लगीं कि वह स्वयं ही हर गतिविधि में भाग लेने लगीं।

वहाँ की अमृतवेला, मुरली क्लास, भोग, सेवा और सबसे बढ़कर दीदियों और भाई-बहनों के निस्वार्थ प्रेम और सेवा ने माँ को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ और ऊर्जावान बना दिया। पहले माँ जो अपने कमरे से बाहर नहीं निकलती थीं, अब मुरली क्लास, योग, और अन्य सेवा में पूरी ऊर्जा और आनंद के साथ भाग लेने लगीं।

सबसे अद्‌भुत बात यह थी कि माँ को जो सम्मान और अपनापन मिला, वह लौकिक रिश्तों में भी मिलना कठिन है। वहाँ की दीदियों और भाई-बहनों ने माँ को सिर्फ एक वरिष्ठ आत्मा के रूप में नहीं, बल्कि अपनी आत्मिक मां की तरह सेवा और स्नेह दिया। माँ को हर पल यह महसूस होता था कि वह सचमुच बाबा की गोद में हैं।

श्रवण कुमार की सेवा का प्रत्यक्ष अनुभव

जब भी मैं खुशराजी में जाती, मुझे हमेशा श्रवण कुमार की कहानी याद आती थी। श्रवण कुमार ने अपने माता-पिता की सेवा जिस समर्पण और निष्ठा से की थी, वही भावना मुझे वहाँ के सेवाधारी भाई-बहनों में देखने को मिली।

लौकिक दुनिया में बच्चों के लिए माता-पिता की इतनी सेवा करना एक सीमा तक संभव है। लेकिन खुशराजी में सेवाधारी भाई-बहनों ने जिस आत्मिक भाव से सेवा की, वह मानव मात्र के लिए एक आदर्श उदाहरण है।

भोजन परोसना, स्वास्थ्य का ख्याल रखना, 24 घंटे चिकित्सा सहायता, दवा का ध्यान रखना — सब कुछ इतनी सहजता और प्रेम के साथ होता था कि लगता था जैसे बाबा स्वयं उनकी सेवा कर रहे हों।

माँ का अंतिम समय भी बाबा की गोद में

माँ की तबियत जब सीरियस हुई, तब खुशराजी की दीदियों ने जिस समर्पण और सूझबूझ से हर स्थिति को संभाला, वह अविस्मरणीय है। माँ का स्वास्थ्य जब बहुत बिगड़ गया, तब दीदी ने बिना विलंब किए तुरंत आवश्यक कदम उठाए और हर निर्णय पूरी जिम्मेदारी और संवेदनशीलता के साथ लिया।

माँ का अंतिम समय भी ऐसे वातावरण में हुआ, जो किसी के लिए भी एक अद्‌भुत वरदान से कम नहीं था। माँ हमेशा कहती थीं कि उनका अंतिम समय बाबा के घर में हो और बिल्कुल वैसा ही हुआ।

जिस प्रकार मधुबन में किसी आत्मा को शरीर छोड़ने के बाद सम्मानपूर्वक विदाई दी जाती है, वैसा ही सम्मान और अपनापन हमें माँ के अंतिम संस्कार में अनुभव हुआ। वहाँ के भाई-बहनों ने पूरे सम्मान और प्रेम के साथ माँ की अंतिम यात्रा संपन्न करवाई।

माँ के अंतिम समय तक बाबा के घर की दिव्यता, दीदीयों की सेवा, और वहाँ के शांतिमय वातावरण ने माँ के आत्मा को एक गहरा संतोष और शांति दी।

अद्भुत अनुभव और अपार कृतज्ञता

खुशराजी में माँ का रहना और फिर उनका अंतिम समय वहाँ बिताना — यह अनुभव हमारे पूरे परिवार के लिए एक आध्यात्मिक चमत्कार जैसा था। बाबा ने अपने वचन को सच कर दिखाया कि —
"मैं तुम्हारे अंतिम समय तक तुम्हारा ख्याल रखूँगा।"

खुशराजी की दीदियों ने, सेवाधारी भाई-बहनों ने और वहाँ के पूरे वातावरण ने हमें एक आध्यात्मिक परिवार का एहसास कराया। मेरी माँ को जो सम्मान और प्यार मिला, वह लौकिक दुनिया में शायद ही संभव हो पाता।

मैं अपनी ओर से और अपने पूरे परिवार की ओर से ईशिता दीदी और पूरे खुशराजी परिवार को हृदय से धन्यवाद और कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। उन्होंने माँ के जीवन के अंतिम समय को बाबा की पालना में इतना सुंदर और दिव्य बना दिया कि आत्मा को गहरा संतोष और शांति मिली।

मेरी सभी भाई-बहनों से यही विनती है कि यदि आपके माता-पिता को बाबा के घर की पालना और सेवा का सौभाग्य मिले, तो उसे कभी न ठुकराएँ। बाबा के इस वरदानस्वरूप स्थान में जीवन का अंतिम समय बिताना वास्तव में एक दिव्य उपहार है।

"शुक्रिया बाबा... शुक्रिया खुशराजी... ओम शांति।"

डॉ. अंकित पटेल

अहमदाबाद

मैं अहमदाबाद से डॉक्टर अंकित हूँ।

मेरी माताजी रेणुका बहन पटेल पिछले लगभग 30 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान में हैं। पिता के देहावसान के बाद उनकी यह गहरी भावना थी कि उन्हें अब सेंटर पर रहना चाहिए, साधनाभवन में रहना चाहिए, या मधुबन में कुछ समय के लिए निवास करना चाहिए। इस भावना के चलते उन्होंने एक-दो बार प्रयास भी किया, लेकिन कहीं भी लंबे समय तक रहना उनके पुरुषार्थ के अनुरूप संभव नहीं हो पाया।

फिर एक दिन अचानक मुझे यह पता चला कि ललित भाई और ईशिता बहन द्वारा खुशराज़ी की सेवाएं प्रारंभ की गई हैं। तब से मेरी माताजी लगभग दो वर्षों से वहाँ रह रही हैं।

खुशराज़ी में रहने के कुछ ही महीनों बाद, उन्होंने मुझसे यह शब्द कहे —

“सब कुछ मिल गया, अब कुछ भी बाकी नहीं रहा।”

जो बातें बाबा मुरली में कहते हैं, उन अनुभवों की साक्षात अनुभूति मेरी माताजी ने अपने शब्दों में लगभग आठ-नौ महीने के भीतर ही व्यक्त कर दी।

इतना ही नहीं, मेरी माताजी पिछले 30 वर्षों से ज्ञान में होने के बावजूद अमृतवेला कभी नियमित रूप से नहीं कर पाई थीं। मुरली क्लास और धारणा में वे बहुत पक्की थीं, लेकिन अमृतवेला कभी उनके जीवन का हिस्सा नहीं बन सका — यहाँ तक कि पिता के देहावसान के बाद जब वे अकेली थीं, तब भी नहीं।

लेकिन खुशराज़ी में आने के बाद से उनका अमृतवेला, मुरली क्लास — सब कुछ 100% नियमित हो गया है।

एक तीसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन उनकी सेहत को लेकर देखने को मिला। घर पर जब भी कोई छोटी-बड़ी स्वास्थ्य संबंधी समस्या आती, तो उससे उबरने में उन्हें काफी समय लगता। लेकिन खुशराज़ी में रहते हुए, चाहे जो भी समस्या आई हो, उनका शरीर इतनी तेज़ी से रिकवर हुआ कि मेरे डॉक्टर मित्रों को भी यह विश्वास नहीं हुआ कि इतनी जल्दी कोई व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ कैसे हो सकता है। यह उनकी जीवनशैली का, वातावरण का और सकारात्मक ऊर्जा का अद्भुत परिणाम है।

और आज उनकी दिनचर्या इतनी व्यस्त, अनुशासित और सेवाभावी हो गई है कि यदि हमें भी उनसे फोन पर बात करनी हो तो एपॉइंटमेंट लेकर बात करनी पड़ती है!

पहले जब वे हमारे साथ घर में थीं तो वे कहती थीं — “मुझे कोई प्रवृत्ति दो।” लेकिन मैं क्या प्रवृत्ति देता? उनकी उम्र और रुचि अनुसार कुछ समझ नहीं आता था।

आज खुशराज़ी में उन्हें इतनी सुंदर, अर्थपूर्ण प्रवृत्तियाँ मिली हैं कि वे स्वयं में संलग्न और पूर्णतः संतुष्ट हैं।

यह सब देखकर मेरी आत्मा से बस एक ही आवाज़ निकलती है:

"शुक्रिया बाबा, शुक्रिया खुशराज़ी की संपूर्ण सेवाधारी टीम, विशेष रूप से ईशिता बहन और ललित भाई।"

आप सभी के अथक प्रयासों से मेरी माताजी का जीवन इतना सार्थक और दिव्य बन पाया है।

ओम शांति।

BK Sister Sonia

USA

Making my father to KhushRaazi was not just a decision—it was a divine direction from BapDada.

It all began during a profound BapDada Milan transmission. As the sacred vibrations of the gathering enveloped me, my gaze was effortlessly drawn to Ishita Behn in the video. In that very moment, my heart whispered softly yet unmistakably—this is Baba's signal. A quiet knowing settled within me, and I realized that Baba was guiding me toward a path that would not only uplift my father's life but also bring profound peace to my own heart. Acting upon that subtle yet powerful inner call, I made the call to KhushRaazi, and from that moment onward, everything unfolded like a beautifully orchestrated divine plan.

The Leap of Faith

Initially, my heart was clouded with questions and concerns.
Would he adjust?
Would he feel at home?
Would this truly be the right environment for him?

But Baba had already laid the foundation long before I even realized it. The moment he stepped into KhushRaazi, the serene and elevated atmosphere embraced him like a warm spiritual cocoon. The vibrations of Shrimat echoed through every corner, the disciplined rhythm of the Madhuban timetable created a sense of spiritual order, and the pure energy of the place radiated through every interaction. Slowly but surely, he began to blossom. His heart became lighter, his soul more peaceful, and his connection with Baba deepened in a way I had never witnessed before.

Blossoming in Baba's Garden

I watched in awe as the subtle transformation unfolded before my eyes. His face, once shadowed with the weight of worldly concerns, now glowed with a quiet, radiant peace. His eyes held a newfound sparkle—the unmistakable reflection of a soul finally at rest in the arms of the Supreme Father.

The divine vibrations of KhushRaazi worked like a healing balm. His body, mind, and soul began to align with the rhythm of Baba's remembrance and Shrimat. The loving care of the dedicated created a nurturing environment where he felt valued and cared for—not as a duty, but as an expression of pure spiritual love.

Every day began with the sweet sound of Baba's song, setting the tone for a day filled with purpose and peace. Mornings were infused with the wisdom of the Murli, afternoons were blessed with peaceful reflections, and evenings carried the quiet contentment of a soul fully aligned with Baba's will. My father wasn't just living—he was thriving.

A Blessing in Disguise

For me, this entire journey has been nothing short of a divine blessing. Watching my father thrive in such a sacred and spiritually charged atmosphere has freed me from the weight of worldly worries. The subtle anxiety that had once gripped my heart—Is he truly happy? Is he well cared for?—has melted away into a deep sense of trust and surrender.

I have learned the profound meaning of detached involvement—to care deeply while surrendering the outcome entirely to Baba. I now understand that when we take even one step toward Baba with faith, He takes a thousand steps toward us, orchestrating the most beautiful outcomes in the most unexpected ways.

I have found peace in knowing that my father is not just being cared for —he is being spiritually uplifted in an environment charged with Baba's presence. His every need—physical, emotional, and spiritual—is being met with such precision and grace that it could only be the handiwork of the Supreme.

Gratitude Beyond Words

My heart overflows with gratitude for this divine home called KhushRaazi. Ishita Behn, with her calm strength and unwavering spiritual focus, has created an oasis where souls are not just cared for—they are uplifted. Her ability to handle every situation with grace and Baba's remembrance is nothing short of inspirational. The Sevadharis, with their selfless service and heartfelt dedication, embody the true spirit of Shravan Kumar—serving not out of obligation, but out of spiritual love and reverence.

I am eternally grateful to Baba for directing my steps toward KhushRaazi. Not only has my father found a sacred space where he is flourishing, but I too have discovered a deeper faith and trust in Baba's plan. This experience has reaffirmed for me that when we surrender with faith, Baba takes care of everything in the most beautiful, perfect way. "Baba, my heart is full. My soul is at rest. Thank you for this divine gift called KhushRaazi." "Wah Baba, wah! Wah my fortune, wah!"

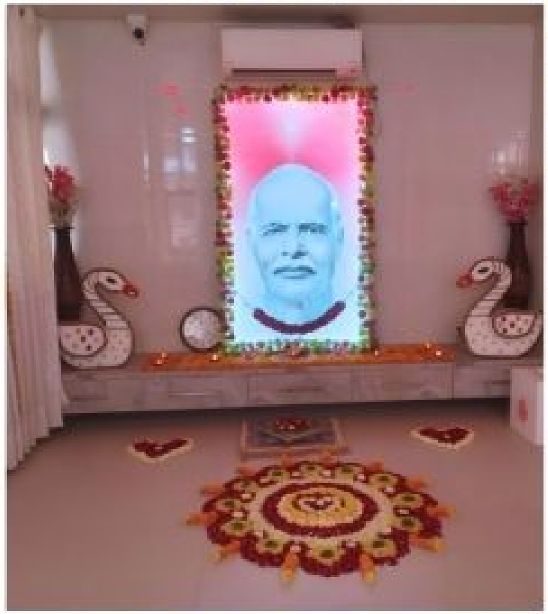

WORLD RENEWAL
SPIRITUAL TRUST
98242-79069

सेवायें

एयरकंडीशन्ड कमरा
24 घंटे ठंडा एवं गरम पानी
एक बॉक्स पलंग
एक अलमारी
एक छोटा साइड बॉक्स
एयरकंडीशन्ड डाइनिंग रूम
अनुभवी राजयोगियों द्वारा क्लास
पूरे दिन के ट्रैफिक कंट्रोल गीत
कपड़े धुलाई करके प्रेस करना
कमरे और बाथरूम की सफाई
आधुनिक फिजियोथेरपी ट्रीटमेंट
सेमी ICU कमरे
एंबुलेंस की सुविधा
पिकनिक का आयोजन
सांस्कृतिक कार्यक्रमों कला प्रदर्शन का अवसर
सामूहिक टीवी देखने की सुविधा
झूले की व्यवस्था
अन्य कई सेवाएं....

दिनचर्या -

सुबह -

03.30	सुप्रभात
04.00 से 04.45	अमृतवेला (8th फ्लोर हॉल)
05.00 से 05.30	चाय / कॉफी / नीबू पानी
05.30 से 06.30	तैयार होना, स्वाध्याय
06.30 से 08.00	मुरली क्लास
08.00 से 08.30	टहलना, कसरत
08.30 से 09.30	नाश्ता
09.30 से 10.30	स्वाध्याय, सेवा, खेलना
10.30 से 11.00	पुस्तकालय
11.00 से 11.30	फलाहार
11.30 से 12.30	खेलना एवं मनन चिंतन

दोपहर -

12.30 से 02.00	भोजन
02.00 से 04.30	विश्राम, स्वाध्याय
04.30 से 05.00	चाय/ कॉफी एवं अल्पाहार
05.00 से 06.30	TV पर रचनात्मक प्रवृतियां
06.30 से 07.30	सामूहिक नुमाशाम योगाभ्यास

रात्रि -

07.30 से 08.30	भोजन, हल्दी वाला दूध
08.30 से 09.00	टहलना
09.00 से 09.30	अव्यक्त वाणी क्लास
09.30 से 10.00	बाबा को चार्ट देना और गुड नाइट योग करना
10.00	शुभ रात्रि विश्राम

रजिस्ट्रेशन योग्यताएं -

- PBKIVV द्वारा सिखाए जा रहे राजयोग का पिछले 5 वर्षों से अधिक समय से नियमित रूप से अभ्यास
- किसी भी प्रकार की मानसिक बीमारी नहीं हो
- वर्तमान में किसी भी प्रकार की गंभीर बीमारी नहीं हो
- वर्ष में कम से कम 10 मास खुशराजी में रहना आवश्यक है, 12 मास भी रह सकते हैं
- बीके टीचर बहन आवेदन पत्र पर हस्ताक्षर करे
- दो व्यक्ति गेरेंटर के रूप में हस्ताक्षर करें

PBKIVV
Donation (80G benefits NOT available)

BANK NAME: BANK OF BARODA
BANK BRANCH: KATHWADA
A/C NAME: PRAJAPITA BRAHMA KUMARIS ISHWARIYA VISHWA VIDYALAYA
A/C No. : 26220100015734
IFSC CODE: BARBOKATHWA (Fifth Character is Zero)
Account Type: Saving

WRST
Donation (80G benefits available)

BANK NAME: BANK OF BARODA
BANK BRANCH: KATHWADA
A/C NAME: WORLD RENEWAL SPIRITUAL TRUST
A/C No. : 26220100015742
IFSC CODE: BARBOKATHWA (Fifth Character is Zero)
Account Type: Saving

Address:
KhushRaazi, Near Sattva International School, Singarva Village, New Singrawa Chosmiya Road, Ahmedabad - 382430

Mobile: 7667421060
Email: khushraazi@bkivv.org

Registrations Open on website -
www.khushraazi.org

"स्नेह की छांव
में जीवन मुस्कुराए"

वानप्रस्थी जैसे दीपक बनें,
धैर्य-शक्ति से जीवन सजे।
अनुभव हैं जैसे पावन कथा,
हर पल बरसे प्रभु का प्रेम।
स्नेह की छांव में जीवन मुस्कुराए,
बाबा की याद में मन हरदम गाए।

सेवाधारी बनते मीत यहाँ,
देते हैं सबको गीत यहाँ।
बिना कहे भी प्रेम बहता,
बाबा का प्यार सबमें रहता।
स्नेह की छांव में जीवन मुस्कुराए,
बाबा की याद में मन हरदम गाए।

खुशराज़ी भवन है प्रेम की राह,
जहाँ हर दिल में है ईश्वरी चाह।
बुज़ुर्गों का मान है सबसे बड़ा,
उनके संग सदा है बाबा खड़ा।
स्नेह की छांव में जीवन मुस्कुराए,
बाबा की याद में मन हरदम गाए।